हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

अप्रैल, 2003 . वर्ष 2 अंक 2

–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

बन्दगी

बन्दगी यह है कि बन्दा इलाही आदेशों का पालन करे। अपने भाग्य से जो मिले उस पर राज़ी रहे और जो (चाहत) न मिले अपने भाग्य का न समझ कर उस पर सन्तुष्ट रहे।

(उसमान ग़नी रज़ि०)

विषय एक नज़र में

अनपढ़ों का विश्वास	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
कुर्आन मजीद का अदब	मौलाना मुह़म्मदुल ह़सनी (रह०)	7
नमाज़ कैसे पढ़ी जाए	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी	8
सुन्दर रहन सहन (बालिकाओं के लिए)	ख़ैरुन्निसा बेहतर	11
ग़ीबत समाज का अत्यन्त कमज़ोर पहलू	मौ० सईदुर्रहमान आज़मी	13
युद्ध करने वालों के साथ सद व्यवहार	डा० इज्तिबा नदवी	15
ग़लत फ़हमियों का इलाज	मौलाना अब्दुल करीम पारेख	17
दुआ करने की फ़ज़ीलत	ह़ैदर अली नदवी	20
आज की तड़पती हुई इन्सानियत की पनाहगाह	सैय्यद मुश्ताक अ़ली नदवी	21
अ़दले जहांगीरी	अ़ल्लामा शिब्ली	23
अ़रबों की उत्पत्ति तथा विकास	मो० रफ़ी (रिसर्च स्कालर)	24
आप की समस्यायें और उनका ह़ल	मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी	26
स्पर्श चिकित्सा इस्लाम धर्म के आईने में	डा० एम० सलमान	28
जिन्नात का परिचय	अबू मर्गूब	30
बनी इस्राईल के लिए शरीअ़त	आसिफ़ अन्ज़ार	31
आओ उर्दू सीखें	इदारा	32
अन्ध विश्वास नहीं तो और क्या ?	मुह़म्मद अ़ली जौहर	33
आपत्तियों की वास्तविकता	नसीम ग़ाज़ी	35
स्वास्थ्य सलाह	डा० एस० एम० आरिफ़ीन	38
लौंग के लाभ	डा० गीता रानी	38
अमरीका और यूरोप में इस्लाम से नवजवानों की रूचि		39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ़ नदवी	40
ग़ुलामाने मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)	मौलाना मुह़म्मद सानी ह़सनी	40

❑❑❑

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

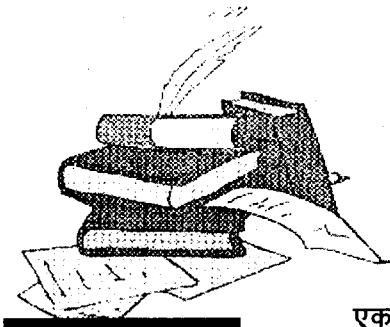

अनपढ़ों का विश्वास

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

एक मौलाना जी इ़ल्मे कलाम (विश्वास सम्बन्धित तर्क विद्या) का अध्ययन कर रहे थे उसी बीच उनके मस्तिष्क में आया कि हम विद्वान लोग इतना ज्ञान रखते हुए भी कभी कभी डांवाडोल होने लगते हैं तो यह अनपढ़ लोग दीहात के रहने वाले, खेतों में काम करने वाले, जिन को विद्वानों की संगत भी नहीं मिलती, ईश विश्वास (अक़ीद–ए–तौहीद) में कैसे सुदृढ़ हो सकते हैं, इस विचार के आने पर उन्होंने किसी अनपढ़ किसान की परीक्षा का निर्णय लिया।

एक दिन सवेरे सवेरे किसी ऐसे गांव में पहुंच गये जहां के लोग उनको पहचानते न थे। देखा एक खेत में एक मुसलमान लुंगी बांधे बन्याइन पहने हल जोत रहा है। मौलाना खेत की एक मेंड पर खड़े हो गये। किसान जब अपनी हराई घुमा कर उस मेंड की ओर आया तो मौलाना रूप देखकर अस्सलामु अ़लैकुम कहा। मौलाना ने वअ़लैकुमुस्सलाम कहा। किसान अपने बैल चलाता हुआ दूसरे किनारे पहुंचा, फिर घूम कर उसी मेंड पर आया तो देखा मौलाना उसी तरह खड़े हैं। उसने हूं हूं की आवाज़ निकाली और बैल रूक गये। किसान बोला मौलाना साहिब क्या मुझ से कौनो काम है ? हां भाई तुम से कुछ पूछना है। मौलाना बोले। किसान ने कहा जल्दी पूछो दोपहर होने को है हम का ई हराई पूरी करैका है। अच्छा यह बताओ कि यह सारा आ़लम (संसार) किसने बनाया है ? उत्तर मिला : हमार अल्लाह तआ़ला। प्रश्न हुआ पानी कौन बरसाता है ? उत्तर मिला : हमार अल्लाह तआ़ला, और को बरसाई ? प्रश्न हुआ : तो अल्लाह एक है कि दो ? उत्तर मिला : अल्लाह तो एक हैं ई दुई की बात कहां से आई ? प्रश्न हुआ अगर कोई कहे दो अल्लाह हैं तो तुम्हारे पास उसका क्या जवाब है ? किसान बोला : वाह मौलाना साहिब यू को कही ? यह कह कर अपनी ज़बान से टक की आवाज निकाली और बैल चल दिये । मौलाना खड़े रहे । जब किसान फिर घूम कर उसी मेंड पर आया तो मौलाना ने कहा भाई रूको तो। फिर किसान ने हूं। हूं। कहा और बैल रूक गये। मौलाना ने कहा अच्छा मान लो मैं ही कहूं कि एक अल्लाह पानी बरसाता है दूसरा धूप निकालता है, इस तरह दो अल्लाह हुए। अब तुम्हारे पास क्या जवाब है ? किसान ने कहा : किसी की खोपड़ी में लाख इलाह हों हम उसके ज़िम्मेदार नहीं लेकिन जो हमका बहकाई उसके लिए हम बहुत बुरे हैं यह कहकर उसने हल की मुठया छोड़ दी और कुदाल उठा कर ऊपर तान ली और मौलाना से बोला : फिर कहौ तो ! मौलाना चार कदम पीछे हटे और किसान से क्षमा मांगते हुए कहा : भैया मैं तुम्हारा इम्तिहान ले रहा था और अपनी शंका दूर कर रहा था । तुम इम्तिहान में पूरे उतरे और मेरी शंका दूर हुई। बेशक अनपढ़ों का ईमान भी पक्का होता है। अब आप काम करो। किसान ने फिर टक की आवाज़ निकाली और बैल चल पड़े उधर मौलाना प्रसन्नता तथा आश्चर्य में डूबे अपने घर लौटे।

सम्भव है कि कहानी गढ़ी हुई हो लेकिन इस में कोई शक नहीं कि अनपढ़ के दिमाग़ में विश्वास सम्बन्धी जो बात बिठा दी जाती है वह पत्थर की लकीर ही हो जाती है जो न आसानी से मिटतीहै न उस पर कोई और लकीर बन पाती है। अतः पढ़े लिखे लोगों का कर्तव्य

है कि वह अनपढ़ों के दिमाग़ में मिथ्या तथा अन्धविश्वास की बातें न बिठाएं।

हदीस में आता है कि रसूल काल में जब बांदी गुलाम (दास) हुआ करते थे । जिनकी आज़ादी में इस्लाम का बड़ा हाथ रहा है। एक सहाबी को शरअ़ी ज़रूरत से एक मुसलमान बान्दी आज़ाद करना थी उन के पास एक अनपढ़ बान्दी थी उनको शक था कि विश्वास के अनुसार वह मुसलमान थी या नहीं। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस की चर्चा की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस अनपढ़ बान्दी से पूछा ऐनल्लाह ? (अल्लाह कहां है ?) उसने आसमान की ओर हाथ उठा कर कहा : फ़िस्समाइ, आसमान में। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह मुसलमान है।

इससे ज्ञात हुआ कि अनपढ़ों में भी यहां तक कि ऐसे अनपढ़ जिनको कोई संगत न मिली हो न मिलती हो उनमें भी शुद्ध तथा पक्के ईमान वाले मिलते हैं और इससे इस कथन पर ईमान ताज़ा हो जाता है कि जिस को अल्लाह हिदायत दे (सत्यमार्ग पर चलाए) उसे कोई गुमराह (पथ भ्रष्ट) नहीं कर सकता और जिसको अल्लाह हिदायत न दे उसको कोई सीधी राह पर ला नहीं सकता।

एक सदाचारी पुत्र अपनी अनपढ़ मां को समझाते हुए कह रहा था : अम्मा ! अगर अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ में डाल दें तो उसकी आग कैसे सही जाएगी? मां नेक थी सादगी और सरलता से उत्तर दिया बेटा जो डालेगा वही काटेगा। बेटा तिलमिला गया कि अरे मेरी मां का अ़क़ीदा कितना ख़राब है यह तो जहन्नम की सज़ा पर राज़ी है। बेटा चिल्लाया अरे अम्मां क्या बकती हो तौबा करो। कलमा पढ़ो। मां घबरा गई उस ने बार–बार तौबा की अस्तग़फ़िरुल्लाह कहा और लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि दोहराने लगी। लेकिन बेटे को बाद में मालूम हुआ कि वह अल्लाह की नाराज़गी के साथ दोज़ख़ से राज़ी न थी। वह अल्लाह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) से राज़ी न थी। उसके कथन का मक़सद था कि मैं तो अल्लाह पर आश्रित हूं वह मुझे जहां भी रखें गे मैं वहां रहूंगी। अन पढ़ होने से बात तो मुंह से ऐसी निकली जिससे शक हो कि अ़कीदा ख़राब है लेकिन जांचने से पता चला कि अ़कीदा ख़राब न था।

ज्ञात हुआ कि अनपढ़ों तथा साधारण समझ वालों का ईमान सहीह (शुद्ध) भी होता है और पक्का भी । बस उनको सादगी से लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) वाला ईमान समझाया और सिखाया जाए और उनको फ़लसफ़याना मूशिगाफ़ियों (जटिलताओं) से दूर रखा जाए।

इसी कल्मे की गवाही की मांग संसार के हर शख़्स से करना उम्मत के उलमा और दीनदारों का कर्तव्य (फ़रीज़ा) है। कम से कम इसका मफ़हूम (अर्थ) उनके कानों तक पहुंचा देना आवश्यक है।

किसी अनपढ़ को दीन समझाने या किसी ग़ैर मुस्लिम को दीन पहुंचाने का सुन्नत के अनुसार तरीका यही है कि दाअ़ी ख़ुद पक्का ईमान रखते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम द्वारा "क़ूलू ला इलाह इल्लल्लाह तुफ़िलह" (कहो : अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं, सफ़ल हो जाओ) की सीधी सी बात पेश करे और समझाए कि जो शख़्स नजात चाहता है वह इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य (मअ़बूद) नहीं और इस बात की गवाही दे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, अल्लाह के रसूल हैं। अब अगर वह सत्य मार्ग की खोज में होगा तो दोनों गवाहियां अदा कर देगा। यदि किसी फलसफ़े में उलझा होगा तो स्वयं ही उस उलझावे से बाहर आ जाएगा, लेकिन अगर उसको नजात तथा सत्य मार्ग की खोज न होगी तो तर्क वितर्क से उसे चुप तो किया जा सकता है परन्तु उसके हृदय में सत्य नहीं उतारा जा सकता है।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

मुहताजों (आश्रितों) के साथ बर्ताव

वल्मसाकीनि (अन्निसाअ : ३६) और नेकी करो मिस्कीनों के साथ।

मुहताजों और ग़रीबों के साथ भलाई करना, उनकी ज़रूरतों को पूरा करना मुसलमान पर एक हक़ है उसको अदा करना चाहिए।

आदमी अपनी दौलत पर घमन्ड करके किसी ज़रूरत वाले से बे परवाई न करे और यह न समझ बैठे कि उसको कभी दूसरे की ज़रूरत न पड़ेगी। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत को पूरा करेगा अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी करेगा और जो किसी मुसलमान की विपत्ति दूर करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत की विपत्तियों में से उसकी कोई विपत्ति दूर कर देगा।

सहाब–ए–किराम ज़रूरतमन्दों की मदद की तलाश में रहते थे। हज़रते ज़ुबैर का इन्तिक़ाल (देहान्त) हुआ तो उनपर लाखों रूपयों का क़र्ज़ था। उनके लड़के हज़रत अ़ब्दुल्लाह उस की अदाएगी की फ़िक्र में थे। एक बार हज़रत हकीम बिन हिज़ाम से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने कहा यह कर्ज़ कैसे अदा करोगे ? अगर मजबूर (विवश) हो जाओ तो मुझ से कहना मैं मदद करूंगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर आ़म तौर से किसी मिस्कीन (ग़रीब) के बिना खाना न खाते थे। हज़रत हारिसा की आंखें जब जाती रहीं तो दरवाज़े से एक धागा बान्ध रखा था जब कोई मिस्कीन (आश्रित) आता तो टोकरी से कुछ खजूरें ले लेते और धागे के सहारे दरवाज़े तक आकर उसको दे देते।

अगर कोई ज़रूरतमन्द किसी क़िस्म की कोई मदद मांगे वह मदद (सहायता) चाहे जिस्म की हो या माल की या इल्म (ज्ञान) की तो उस की मांग (सुवाल) को सख़्ती से रद न करना चाहिए। जहां तक हो सके उसको पूरा करना चाहिए और पूरा करना सम्भव न हो तो नर्मी से टाल देना चाहिए। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:–

"व अम्मस्साइल फ़लातन्हर" (ज़ुहा) और तू मांगने वाले को झड़का न कर।

मदद की एक शक्ल यह भी है कि किसी दूसरे से उसकी मदद की सिफ़ारिश कर दी जाए। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो नेक बात की सिफ़ारिश करेगा तो उसके सवाब में उसका भी हिस्सा है और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा तो उसके गुनाह में उसका भी हिस्सा है।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास कोई ज़रूरतमन्द (आवश्यकता वाला) आता तो आप सहाबा से फ़रमाते कि तुम सिफ़ारिश करो तो तुम को भी सवाब मिलेगा।

पड़ोसियों के साथ बर्ताव –

वल्जारि ज़िलक़ुर्बा वल्जारिल् जुनुबि वस्साहिबि बिलजंबि (अन्निसा : ३६) और अल्लाह ने आदेश दिया कि अपने करीब के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी के साथ (नेकी करो)

पड़ोसी (जार) वह दो आदमी हैं जो पास पास रहते और बसते हैं। इस्लाम में पड़ोसी का भी बड़ा हक़ माना गया है।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह पर और क़ियामत के दिन यक़ीन रखता है वह पड़ोसी की इज़्ज़त (सम्मान) करे और उसको दुख न दे।

एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वह मोमिन न होगा, ख़ुदा की क़सम वह मोमिन न होगा, ख़ुदा की क़सम वह मोमिन न होगा। (तीन बार) सहाबा ने पूछा कौन या रसूलल्लाह ? फ़रमाा वह जिस का पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित (महफ़ूज़) नहीं है।

फ़रमाया वह मोमिन नहीं जो पेट भर खाए और उसका पड़ोसी उसके बग़ल में भूखा रहे।

इस आयत में पड़ोसी की दो किस्में हैं। एक निकट का पड़ोसी दूसरे थोड़ी दूर का पड़ोसी। कुछ आ़लिमों का कहना है कि निकट (क़रीब) के पड़ोसी का मतलब है वह पड़ोसी जिससे

(शेष अगले पृष्ठ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास के लिए नबी की दुआ।

७१. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मुझे अल्लाह के रूसल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सीने से लगाया और दुआ दी कि ऐ अल्लाह इसको हिक्मत सिखा दे। (बुख़ारी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर का सलाह व तक़वा।

७२. हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अ़ब्दुल्लाह (अर्थात अ़ब्दुल्लाह इब्नि उमर) नेक सालेह हैं। (बुख़ारी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद की रसूलुल्लाह स० से मुशाबहत।

७३. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से रिवायत है कि हमने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से ऐसे शख़्स के बारे में पूछा जो चाल ढाल और शक्लो सूरत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बहुत क़रीब हो ताकि उससे यह चीज़ हासिल करें (और उसको अपनाएं) उन्होंने फरमाया : मैं इब्नि उम्मे अ़ब्द (अर्थात अ़ब्दुल्लाह इब्नि मसऊद) से बढ़ कर किसी को शक्ल व सूरत और चाल ढाल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अधिक क़रीब नहीं पाता। (बुख़ारी)

हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ (अन्सारी) रज़ियल्लाहु के इन्तिकाल पर अ़र्श इलाही का हिलना।

७४. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कहते सुना कि सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इन्तिक़ाल पर अर्श इलाही हिल गया। (बुख़ारी),

चार कुर्आन वाले सहाबा ।

७५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि इन चार से कुर्आन सीखो:– १. अब्दुल्लाह मसऊद, २. सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा ३. उबैइ इब्नि कअ़ब, ४. मआ़ज बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

(यह चारों हाफ़िज़े कुर्आन थे और कुर्आन मजीद सीधे हुजूर से प्राप्त किया था।)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) को ज़िन्दगी ही में जन्नत की बशारत

७६. हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को किसी के बारे में जो ज़मीन पर चल फिर रहा हो फ़रमाते नहीं सुना है कि यह जन्नत वालों में से एक हैं। सिवाए अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) के (बुखारी) नोटः यह रिवायत दूसरे सहाबा को जन्नत की खुशख़बरी मिलने से पहले की हो गी।

अल्लाह के महबूब रसूल के महबूब सहाबी

७७. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि क़बीला बनी मख़जूम की एक औरत के एक मुआ़मले ने क़ुरैश को फ़िक्रमन्द कर दिया। उन्होंने कहा इस मुआ़मले में (सिफ़ारिश की) कौन हिम्मत कर सकता है सिवाए रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के महबूब उसामा बिन ज़ैद के (कि यह जुर्अत वही कर सकते हैं) (बुख़ारी)

मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिए जाना।

८१. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिए दूसरी बस्ती रवाना हुआ। अल्लाह तआ़ला ने उसके रास्ते में एक फिरिश्ता मुक़र्रर किया जब यह उसके पास से गुज़रा तो फ़िरिश्ते ने कहा : कहां का इरादा रखते हो ? उस शख़्स ने जवाब दिया मैं उस बस्ती में अपने भाई से मिलने जा रहा हूं। फ़िरिश्ते ने कहा क्या उसने तुम पर कोई इहसान किया है जो उसको निभाते हो ? उसने कहा नहीं। मुझ को उससे अल्लाह के लिये महब्बत है। फ़िरिश्ते ने कहा मैं अल्लाह का कासिद हूं। बेशक अल्लाह तआला ने तुम से महब्बत की जैसे तुमने उसके लिए महब्बत की। (मुस्लिम)

कुर्आन मजीद का अदब (आदर) और सम्मान

मौ० मुहम्मदुल हसनी

व इज़ा कुरिअलकुर्आन फ़स्तमिअू लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम तुर्हमून० (अअ़राफ़ : २०४)

जब कुर्आन शरीफ़ पढ़ा जाए तो उसको ख़ामोशी के साथ कान लगाकर सुनो। ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाए। कुर्आन शरीफ़ हम से सम्बोधित (बात करने वाला) है। उसका प्रथम नियम यह है कि हम बड़े आदर और ख़ामोशी और कान लगाकर उसको सुनें और उसको दिल में बिठा लें। उसका फल यह मिलेगा कि अल्लाह हमें दोनों संसार में अपनी दया से सरफराज़ फ़रमाएगा। कुर्आन का यहां हम से यह मुतालबा नहीं है कि हम इसके मानी और अर्थ पर आवश्यक उबूर प्राप्त कर लें, हां यह अवश्य कहा गया है कि आदर, शान्ति और यकसूई के साथ उसको सुनें या पढ़ें। दूसरे शब्दों में यूं कहा जा सकता है कि कुर्आन की प्रथम शर्त पाकी (पवित्रता) है और दूसरी शर्त उसका आदर और सम्मान है। यदि इन दोनों शर्तों पर अमल करते हुए कुर्आन को हाथ में लेगें, पढ़ेंगे या किसी से सुनेंगे तो अल्लाह अपना वादा अवश्य पूरा करेगा। उसकी दया की सबसे बड़ी पहचान यह होगी कि कुर्आन मजीद का अर्थ उसके विषय और उसकी बारीकी और वास्तविकता जो हमारी समझ से बाहर है और जो हमारी योग्यता से दूर है वह केवल अल्लाह की कृपा से खुद बखुद हमारी समझ में आने लगेगी। लेकिन यह बात धीरे–धीरे पैदा होगी। पाकी और आदर जितना मुकम्मल होगा उसी रफ़्तार से उसके विषयों से वास्तविकता से परदा उठता जाएगा जो माद्दी (भौतिक) गन्दगी, व्यस्ता, मानसिक उथल पुथल शैतानी ख़याल और सोच तथा हमारी व्यक्तिगत इच्छाओं के कारण हमारी निगाहों पर पड़ा हुआ था वह कैफ़ियत जिस को हदीस में सीने के भरम और मामलात में उथल पुथल बताया है और जिस से हुजूर ने पनाह मांगी है इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगी। यह कुर्आन पाक का प्रथम पुरस्कार है जो एक ईमान वाले को पाकी और उसके आदर व सम्मान के पश्चात ख़ुदा की तरफ़ ले जाता है।

कुर्आन पढ़ने के कुछ और आदाब

- कुर्आन मजीद छू कर और देखकर पढ़ने के लिए वजू होना ज़रूरी है।
- अच्छा यह है कि किसी पवित्र स्थान में बैठकर अदब से पढ़ें।
- अच्छा है कि मस्जिद में बैठ कर कुर्आन पढ़ें।
- जो लोग हर वक्त या अक्सर वक्त ज़बानी कुर्आन पढ़ना चाहें उनके लिए हर हाल में कुर्आन मजीद पढ़ना अच्छा है। लेटे हों या बैठे। वजू से हों या बिना वजू, अलबत्ता जनाबत की हालत (अर्थात जब नहाना अनिवार्य हो) में पढ़ना मना है।
- हज़रत आइशा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर हाल में (जुबानी) तिलावत फ़रमाया करते थे। वुजू के साथ भी और बिना वजू के भी अलबत्ता जनाबत की हालत में कुर्आन न पढ़ते थे।
- कुर्आन मजीद की तिलावत के लिए कोई समय निश्चित कर लेना दुरुस्त है।

(अगले पृष्ठ का शेष)

कोई रिश्तेदारी भी हो और दूर के पड़ोसी का अर्थ है ऐसा पड़ोसी जो रिश्तेदार न हो। कुछ आ़लिमों का मत है निकट के पड़ोसी से तात्पर्य है मुसलमान पड़ोसी और दूर के पड़ोसी का मतलब है ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी।

दूसरे मज़हब के पड़ोसी के साथ भी नेकी का आदेश है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ने एक समय एक बकरी ज़ब्ह की उनके पड़ोस में एक यहूदी का घर था। उन्होंने घर के लोगों से पूछा कि तुम ने मेरे यहूदी पड़ोसी को भी भेजा? क्योंकि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कहते सुना है कि मुझे जिब्रील अ़लैहिस्सलाम पड़ोसी के साथ नेकी (सद्व्यवहार) करने की इतनी ताकीद करते रहे कि मैं समझा कि वह पड़ोसी को तरके का अधिकारी (हक़दार) बना देंगे।

पड़ोसी की इन दो किस्मों के अतिरिक्त एक क़िस्म और भी है जिसको आ़म तौर से पड़ोसी नहीं कहते हैं मगर वह पड़ोसी ही की तरह अक्सर (प्रायः) साथ रहता है। उसको कुर्आन ने पहलू (बग़ल) का साथी बताया है, जैसे सफ़र का साथी, पेशे और काम का साथी इन सब के साथ हम को नेकी का बरताव करना चाहिए।

नमाज़ कैसे पढ़ी जाये

मौलाना सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी

अल्लाह ने नमाज़ को सम्मान व श्रृद्धा, लगन और तन्मयता, प्रतिष्ठा व गम्भीरता, सहयोग और सामूहिकता का ऐसा वातावरण प्रदान किया है जिसकी नज़ीर किसी अन्य धर्म में नहीं मिलती।

अब आइये मालूम करें कि नमाज़ किस प्रकार पढ़ी जाये और इसमें क्या पढ़ा जाये, कैसे खड़े हों, कैसे झुकें और किस प्रकार इसे प्रारम्भ और समाप्त करें।

अज़ान

सबसे पहले अज़ान को लीजिए जो पांच वक्त बुलन्द आवाज़ से कही जाती है जिसकी गूंज से कोई गांव, कोई शहर और मिली जुली आबादी वाली कोई बस्ती मुश्किल से ख़ाली होगी। अज़ान के शब्द और उसका अनुवाद इस प्रकार है :

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

१. अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

,, ,, ,, ,,

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह

२. मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं।

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह

,, ,, ,, ,,

अशहदु अन्नमुहम्मदर्रसूलुल्लाह

३. मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

अशहदु अन्नमुहम्मदर्रसूलुल्लाह

हय्य अ़लस्सलाह ! हय्य अ़लस्सलाह !

४. आओ नमाज़ की ओर। आओ नमाज़ की ओर।

हय्य अ़लल्फ़लाह हय्य अ़लल्फ़लाह

५. आओ कामयाबी की ओर। आओ कामयाबी की ओर।

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

६. अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

नमाज़ के एलान का नाम है अज़ान

नमाज़ के एलान के लिए और नमाज़ के बुलावे के तौर पर जो वाक्य कहे जाते हैं उनमें इस्लाम के उद्देश्य, अनेकेश्वरवाद की पहचान और दीन का निचोड़ संक्षेप में सहज रूप से सारगर्भित है और इस एलान में इस्लाम की सुनिश्चि और ठोस दअ़वत सन्निहित है। अज़ान में दीने इस्लाम का सारांश और ख़ुलासा आ गया है। अज़ान अल्लाह की बड़ाई का एलान है कि वह हर बड़े से बड़ा है फिर इसमें दोनों गवाहियां मौजूद हैं, तौहीद की गवाही भी और रिसालत की गवाही भी। अज़ान में नमाज़ की दअ़वत और पुकार है कि नमाज़ लोक–परलोक दोनों में भलाई का रास्ता है। अज़ान के शब्द मन–मस्तिष्क दोनों को एक साथ सम्बोधित करते हैं, मुस्लिम, ग़ैर–मुस्लिम दोनों को आकर्षित करते हैं, सुस्त आदमी में चुस्ती पैदा करते हैं और ग़ाफ़िल को होशियार करते हैं।

पाकी (तहरात)

नमाज़ के लिए तहारत और वुज़ू का हुक्म दिया गया है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद – "ऐ ईमान वालो जब तुम नमाज़ को उठो तो अपने चेहरे और अपने हाथों को कोहनियों साहित धो लिया करो और अपने सरों पर मसह कर लिया करो और अगर तुम जनाबत (मैथुन के पश्चात, स्नान की आवश्यकता, अशुचि, अपवित्रता) की हालत में हो तो (सारे शरीर को) पाक साफ़ कर लो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम से कोई इस्तिन्जा (शौच) से आये या तुम ने मैथुन किया हो फिर तुम को पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो अर्थात अपने चेहरे और हाथों को इससे मसह कर लिया करो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम्हारे ऊपर तंगी डाले, बल्कि वह तो चाहता है कि तुम्हें खूब पाक़ साफ़ रखे और तुम पर अपनी नेअ़मत (वरदान) पूरी करे ताकि तुम शुक्रगुज़ारी करो।" (सूरः माइदा–६)

पाकी और वुज़ू अगर ईमान पर एहतिसाब के साथ अमल में आये तो वह मनुष्य के अन्दर एक प्रकार की चुस्ती को जागृत करता है और नमाज़ के स्वागत और उसे क़ुबूल किये जाने की क्षमता उत्पन्न करता है।

हमारे नबी (सल्ल०) ने वुज़ू व

तहारत में दातून करने की भी शिक्षा दी है और ताकीद की है।

नमाज़ से पहले वुज़ू

नमाज़ से पहले मुसलमान को वुज़ू करना होता है। वुज़ू तहारत के उस ख़ास तरीक़े का नाम है जिसके बिना नमाज़ नहीं होती। वुज़ू में पहले पहुंचे तक तीन बार हाथ धोये जाते हैं, फिर तीन बार कुल्ली की जाती है, फिर तीन बार नाक, पानी से साफ़ की जाती है, फिर तीनबार मुख को माथे के बालों से ठुड्डी के नीचे तक और इस कान से उस कान की लौ तक धोते हैं, फिर दाहिना हाथ कोहनियों सहित तीन बार धोकर बायां हाथ कोहनियों सहित तीन बार धोते हैं, फिर एक बार सारे सर पर मसह करते हैं, अर्थात, हाथ तर करके सर के बालों पर एक बार फेर लेते हैं, फिर दाहिना पांव टखने समेत तीन बार धोते हैं, फिर बायां पांव इसी प्रकार धोते हैं। पेशाब, पाख़ाना और रियाह (हवा) आदि ख़ारिज होने से वुज़ू की ज़रूरत हो जाती है और इसके बिना नमाज़ दुरुस्त नहीं होती, सो जाने से वुज़ू की ज़रूरत पड़ जाती है। एक वुज़ू से (अगर वह न टूटे) कई–कई वक़्त की नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं।

मस्जिद में मुसलमान का मअ़मूल और तरीक़ा

मस्जिद जाकर अगर वुज़ू है तो उसी वक्त नहीं तो वुज़ू करके आदमी सुन्नत या नफ़ल पढ़े, अगर वह पढ़ चुका है तो खामोश नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठ जाये या क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत (पाठ) अथवा वज़ीफ़ों में व्यस्त रहे। जमाअ़त का वक़्त आता है तो पहले इक़ामत कही जाती है जो जमाअ़त के शुरू होने का एलान है, इसमें सब वही शब्द हैं जो अज़ान में कहे जाते हैं, केवल दो वाक्य अधिक होते हैं – क़द क़ामतिस्सलाह क़द क़ामतिस्सलाह (नमाज़ खड़ी होने जा रही है, नमाज़ खड़ी होने जा रही है) यह वाक्य हय्या अलल फ़लाह के पश्चात बढ़ाये जाते हैं।

सफ़बन्दी और जमाअ़त

जो लोग मस्जिद में इधर उधर या किसी नेक काम में लगे होते हैं सब सफ़ (क़तार) में आकर खड़े हो जाते हैं। इक़ामत के ख़ात्मे पर इमाम जो मुहल्लों का कोई धार्मिक विद्वान, अथवा हाफ़िज़ या कोई पढ़ा लिखा मुसलमान होता है। तकबीर, कहता हुआ कानों की लौ तक हाथ उठाकर नाफ़ पर हाथ बांध लेता है और नमाज़ शुरू कर देता है और इस तरह इमाम और इस तरह इमाम और मुक़तदी (अनुसरण करने वाले) गुलामों की तरह हाथ बांधे हुए खुदा के सामने खड़े हो जाते हैं। इमाम नमाज़ियों से आगे बीच में खड़ा होता है कुछ देर इमाम व मुक़तदी सब ख़ामोश होकर एक दुआ पढ़ते हैं जो इस प्रकार हैं :

''सुबहानकल्लाहुम्म व बिहम्दिका व तबारकसमुक व तआ़ला जद्दुक व लाइलाह ग़ैरूक''

अनुवाद – ऐ अल्लाह तू खूबियों वाला है, तेरा नाम मुबारक है, तेरी शान बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं है।

फिर अगर नमाज़ जहरी होती है तो इमाम आवाज़ से क़िराअत शुरू कर देता है। इस दुआ के बाद वह सूरः फ़ातिहा पढ़ता है, यह हर नमाज़ में पढ़ी जाने वाली सूरः है और यह क़ुरआन मजीद का अमुख और इस्लाम का खुलासा है। यह क़ुरआन का सबसे अधिक पढ़ा जानेवाला भाग है और इस्लाम में इसका बड़ा दर्जा है। सूरः फातिहा का अनुवाद इस प्रकार है :

अनुवाद – शुरू अल्लाह का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालनहार है। बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है। इन्साफ़ के दिन का मालिक है। ऐ अल्लाह हम तेरी ही अ़िबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। हमको सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा, न कि उनके जिन पर गुस्सा होता रहा और न गुमराहों के।

इस सूरः के ख़त्म होने पर इमाम और मुक़तदी 'अमीन' कहते हैं। जिसका अर्थ है 'ऐ अल्लाह हमारी दुआ क़बूल फ़रमा।'

सूरः फ़ातिहा के बाद क़ुरआन मजीद के किसी ऐसे भाग की तिलावत का हुक्म है जो याद हो और आसानी से ज़िहन में आ जाये। इसका उद्देश्य यह है कि यह अर्थ और भाव भली प्रकार मन में बैठ जाये और इनकी जड़ें गहरी और मजबूत हो जायें। इसलिए कि नमाज़ अ़िबादत भी है और शिक्षा भी। इमाम कुर्आन शरीफ़ की कोई सूरः या कुर्आन की कुछ आयतें पढ़ता है। इसके बाद इमाम तकबीर कहता है और सब नमाज़ी आधा झुक जाते हैं इसको रूकूअ़ कहते हैं, इसमें तीन बार या इससे अधिक सुब्हान रब्बियल अ़ज़ीम (मेरा रब जो बड़ी शान

वाला है, पाक है) कहते हैं। फिर "रब्बना लकल हम्द" (ऐ हमारे रब तेरे वास्ते सब खूबियां हैं) कहते हैं। फिर इमाम अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दे में जाता है और मुक़तदी भी उसकी पैरवी करते हैं। सज्दे में माथा और नाक ज़मीन से लगी कुहनिया ज़मीन से उठी हुई बगलों से अलग होती हैं। घुटने ज़मीन से लगे होते हैं। सज्दे में तीन बार या इससे अधिक 'सुबहान रब्बी यल आला" (मेरा रब सब से बुलन्द है) कहा जाता है, इसके बाद "अल्लाहु अकबर" कहते हुए विशेष आकृति में सीधे बैठ जाते हैं, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए इसी तरह दूसरे सज्दे में जाते हैं। सज्दे पूरी नमाज़ में ख़ुदा के सान्निध्य का सबसे अन्तिम रूप है और ख़ुदा को सर्वाधिक प्रिय व पसन्दीदा है। हदीस में आता है कि –

अनुवाद – "बन्दा अपने रब से सर्वाधिक क़रीब सज्दे में होता है, इसलिए इसमें खूब दुआ करो।" (अबू दाऊद)

अतएव नमाज़ी इस क़ीमती मौक़े को ग़नीमत जानता है।

फिर दूसरी रकअ़त के लिए खड़े हो जाते हैं इसकी वही तरकीब है जो पहली रकअ़त में गुज़री इस पर हर रकअ़त को क़ियास करना चाहिए। हर दो रक़अत के बाद बैठना जरूरी है जिसको "क़अ़दा" कहते हैं जिस क़अदा के बाद खड़ा होना हो उसमें अत्तहीयात पढ़ते हैं जिसका अर्थ इस प्रकार है :

अनुवाद– "सब ज़बानी और माली अ़िबादतें और पाक चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं । ये अल्लाह के नबी आप पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो और उसकी बरकत नाज़िल हो और सलाम हम पर और खुदा के नेक बन्दों पर हो। मैं इकरार करता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मैं इक़रार करता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं।"

और जिस क़अ़दा के बाद सलाम फेरना होता है उसमें इस दरूद को और बढ़ा देते हैं जिसका अनुवाद यह है :

"ऐ अल्लाह, मुहम्मद (सल्ल०) और उनके घरवालों पर रहमत नाज़िल कर जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम (अ०) और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमाई है। निश्चय ही तू तमाम खूबियों वाला है और बुजुर्गी वाला है ऐ अल्लाह और उनकी आल पर बरकत नाज़िल कर हज़रत मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल की। हज़रत इब्राहीम (अ०) और उनकी आल पर यक़ीनन तू ख़ूबियों वाला और बुजुर्गी वाला है।"

मोमिन का आत्म विश्वास

अल्लाह की स्तुति बयान करने, उसका हक़ अदा करने और हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर दुरूद व सलाम भेजने के बाद नमाज़ी को भी इस सलाम व रहमत में से कुछ अंश अवश्य मिलता है। जिसका वह मुहताज है और जिस की कामना करता है और जो इस्लाम की पहचान है और यह मअ़लूम होता है कि वह हर युग में नेकों के साथ है, और सलाम व सलामती में उनका साथी और बराबर का हिस्सेदार, भागीदार है। यह बात नमाज़ी में आशा और आत्मविश्वास पैदा करती है। निराशा को दूर करती है। नमाज़ नमाज़ी को उम्मत के दूसरे नमाज़ियों के साथ एक सफ़ में खड़ा कर देती है।

फ़िर नमाज़ी अपने लिए दुआ करता है और जहन्नम के अज़ाब, क़ब्र के अ़ज़ाब, ज़िन्दगी व मौत की आज़माइशों से अल्लाह की पनाह चाहता है।

नमाज़ का समापन

नमाज़ की समाप्ति पर उसे हर प्रकार से भली–भांति अदा करने के बावजूद नमाज़ी अपनी भूल–चूक, अपनी कोताही को स्वीकार करता है, उसका ऐतिराफ़ करता है, मानो वह यह कहता है कि हमने आपकी वैसी अ़िबादत न की जैसी अ़िबादत करने का हक़ है और वह समापन पर जो दुआ पढ़ता है उसका अनुवाद इस प्रकार है :

"ऐ अल्लाह मैंने अपने नफ़्स (अस्तित्व) पर बहुत ज़ुल्म किया है, और तेरे सिवा नहीं है कोई इन गुनाहों को मुआ़फ़ करने वाला। बस तू अपनी विशेष कृपा से मुझे मुआ़फ़ फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा। बेशक तू ग़फ़ूर व रहीम है।" (सहीह़ बुख़ारी)

मुस्लिम समाज में मस्जिदों का महत्व

नमाज़ के लिए ऐसी मस्जिदें बनाई गई हैं जो अपनी सादगी, गरिमा, शान्ति और सुख–चैन, पवित्रता व पाकीज़गी, अपने भरपूर शान्तिमय आध्यात्मिक वातावरण और तौहीद (अनेकेश्वरवाद) के खुले हुए लक्षण में दूसरे धर्मों की अ़िबादत गाहों से बिल्कुल भिन्न हैं। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद – "(वह) ऐसे घरों में है जिनके लिए अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनका अदब किया जाये और उनमें उसका नाम लिया जाये, इनमें वह लोग सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं, ऐसे लोग जिन्हें

(शेष पृष्ठ २२ पर)

सुन्दर रहन सहन

(बालिकाओं के लिए)

ख़ैरुन्निसां 'बेहतर'

मैका

मां–बाप का अपनी औलाद के प्रति ध्यान न देने का नतीजा

अब स्वयं मां–बाप अपनी औलाद के ताबेदार (अधीनस्थ) और नाज़बर्दार हैं। यह उनको शिक्षा न देने का असर है। शिक्षा न देकर उनसे निश्चिन्त रहते हैं जो मां बाप औलाद से बेफिक्र रहेंगे, स्वयं महकूम और उनको हाकिम बनायेंगे, उनकी हर इच्छा पूरी करेंगे, उन्हें हर तरह का अधिकार देंगे उनकी खुशी को अपनी इच्छा पर प्राथमिकता देंगे, उनका दिल तोड़ना स्वीकार न करेंगे, बुरी भली बातें न समझायेंगे, फिर वह क्यों कर उनके कब्ज़ा में आ सकती हैं। निश्चय ही उनकी यही हालत होगी जो इस समय देखने में आ रही है। आमतौर से इसका नतीजा यह है कि अब लड़कियां बहुत आज़ाद और बे ख़ौफ़, न दुनिया का शर्म न इज़्ज़त का ध्यान, न ग़ैरत का लेहाज़। यह भी नहीं जानतीं कि ग़ैरत और शर्म कहां की जाती है, न यह मालूम की इसकी गरिमा क्या है। मुरौवत व मुहब्बत की राह भूल गईं। शर्म व हया के रास्ते से बहक गईं। अब मानो इतना ध्यान नहीं है कि किस रास्ते से हम आये हैं और कहां जा रहे हैं। नेक संगत से अज्ञान मनोरंजन की शौक़ीन, सैर सपाटे पर कुर्बान, नाविलों पर सदक़े, क़िस्सा कहानियों पर निसार, कुर्आन व हदीस से बेज़ार, अच्छे कामों से ग़ाफ़िल, बुरे कामों की तरफ़ झुकाव, झूठ बोलने वाली, ऐब ढूंढने वाली, दोस्तों की दुश्मन, दुश्मनों की दोस्त, तेज़ मिज़ाज, जिसका जो ढंग देखा पसन्द कर लिया, जो राह चाही उस पर चल पड़ीं, न शरीअत की पाबन्दी न अदब का ध्यान, न इस्लामी ग़ैरत, न आयन्दा की ख़बर, न अन्जाम पर नज़र, बुरे भले की पहचान नहीं, अपने पराये का ज्ञान नहीं बुरा – भला, इज़्ज़त व ज़िल्लत, शरीफ़ व रज़ील (सज्जन व दुर्जन), आक़ा व गुलाम अमीर व फ़क़ीर, बहार व पतझड़, रन्ज व राहत, शर्म व बेहयाई, ज्ञान व वज्ञान, अन्धेरा–उजाला, देखी–अनदेखी, पाप–पुण्य मानो सब से नाता तोड़ आयीं।

शर्म व झिझक

अपने रिश्ते के भाइयों से इस तरह पेश आओ गोया पर्दा ही करती हो, कभी उनसे आंख मिला के बात न करो, कोई काम अपना बनाया हुआ औरों को न दिखाओ, हंसी मज़ाक़ न करो, अगर वह छेड़ें तो तुम ध्यान न दो बल्कि तुम्हें नागवार हो, ऐसे बर्ताव रखो जिस से देखने में ग़ैरियत पाई जाये। इसका भी ख़्याल रखो कि तुम्हारा नाम लेकर कोई ज़ोर से न पुकारे कि बाहर वाले तुम्हारे नाम जान लें तुम्हें ख़बर भी न हो, घर में किसी को बुलाकर न बिठाओ, उनका राग न सुनो, हर बात की एहतियात रखो।

अपने कपड़े, अपना ढंग वह रखो जो तुम्हें शोभा दे। बूढ़ी बनकर न रहो। किसी की बात में दख़ल न दो, आंखें चार करके बातें न बनाओ, पान तम्बाकू खा कर मुंह लाल न करो, यह लड़कियों को शोभा नहीं देती, शर्म के साथ उठो बैठो। सर न खुले। इधर उधर देखती न चलो, खुली जगह न बैठो, ताक झांक से बचो, बदनामी से बचती रहो, न तो बद हो न बदनाम हो। बुरी बात जल्द मशहूर होती है। किसी लड़के के साथ न बैठो।

नाविल और अफ़साने

नाविल न देखो, बल्कि उसे अपने घर में न रखो, न किसी को लाने दो। आमतौर पर लड़कियां अब नाविल की ऐसी आदी हैं कि अगर किसी समय न मिले तो गोया फ़ाक: है। इससे ख़ुदा के लिए बाज़ रहो। इनको पढ़कर अपने दिलों को बेग़ैरत (निर्लज्य) और निगाहों को आवारा न करो। अपनी इज्ज़त व नामूस (मर्यादा) और हुरमत (प्रतिष्ठा) का ध्यान रखो और उनकी रक्षा करो। ग़ज़ल ख़्वानी का शौक़ न रखो, यह भी तुम्हें शोभा नहीं देता। अगर तुम्हें राग निकालने का शौक़ है तो मुनाजातें (ईशप्रार्थनायें) ही क्या कम हैं, ग़ज़लों में वह शब्द आते हैं जो तुम्हें सुनना न चाहिए, न यह कि तुम खुद सुनाओ।

बच्चियों! तनिक ध्यान दो, कितना अन्तर आ गया है। मात्र विचारधारा बदल जाने से तमाम बातें बदल गयीं। न वह रौनक़ रही है, न वह दौलत, न वह बरकत, न किसी चीज़ में लज़्ज़त, न बातों में आनन्द, न

कपड़े में ज़ीनत, न बच्चों में बचपन, न बूढ़ों में समझ। अब तो दुनिया ही दूसरी है। बजाय शर्म हया के अब बेहयाई है। घरों में अशलील साहित्य की रेल पेल है जिन से बेहयाई की वबा (महामारी) फूट रही है। और सुन्नत की पैरवी के बजाय दुनियादारी है। इतमीनान व खुशी के बजाय चिन्ता व परेशानी है। जो खाते पीते लोग बरसों मेहमानों को खिलाते थे, आज अच्छे से अच्छे घर अपने लिए परेशान हैं वह दिन हैं न वह रातें। वह सूरतें हैं न वह सीरतें (किरदार) न वह दिल हैं न वह हिम्मतें, न वह दिलचस्पी के सामान न दिललगी। हर जगह उफ़ उफ़ की सदा आ रही है, यह सब कुविचारों का फल है। जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते। शर्म केवल यही नहीं कि तुम पर्दे में बैठ गईं, पर्दा हो गया । शर्म यह भी है कि किसी से फरमाइश न करो । इससे आदमी ख़फीफ़ (लज्जित) हो जाता है चाहे कितना ही प्यारा हो। ग़ैरत बड़ी चीज़ है।

छोटों से प्रेम व स्नेह का व्यवहार

ऐसी रहो कि तुम से किसी को तकलीफ़ न हो। लोकप्रिय बनो। भाई भावज तुम से खुश रहें। भतीजी भतीजे तुम्हारी मुहब्बत का दम भरने लगें। तुम्हारे व्यवहार से सब खुश रहें। ग़ैरत और शर्म यह भी है कि अपने को बुरी हालत में न देख सको। छोटों से मुहब्बत करो। उनके खाने कपड़े का ध्यान रखो। उनसे लड़ो भिड़ो नहीं। बहुत नर्मी से काम लो। पढ़ने लिखने का शौक़ दिलाओ। सवेरे उठकर ज़रूरत के लिए पानी और खाना मौजूद रखो जब उस से निवृत्त हो जायें किताब हाथ में देकर पढ़ने के लिए भेज दो। तात्पर्य कि हर समय उनका ध्यान रखो।

भाई भावज से बर्ताव

बड़े भाई के साथ तहज़ीब का बर्ताव रखो। उनकी राय से काम करो। कभी अपनी ईजाद से टोपी, रूमाल आदि बना के दो। जब वह घर में आयें तो उनको कमरा साफ़ करके बिस्तर लगा दो। भावज से यह बर्ताव रखो जो अपनी सगी बहन से रखती हो, कोई हिर्स (द्वेष) न करो, बात बात पर न बिगड़ो, जो काम करो खुशी खुशी करो। साथ खाओ पियो। उनकी ओर अपनी चीज़ों में फ़र्क़ न करो, बदगुमानी (दुर्भावना) का मौका न आने दो। ख़ानादारी का इन्तेज़ाम मिलजुल कर करो, विरोध न रखो, एक जान हो के रहो। अगर कोई बात ग़लती से हो जाये तो मां बाप से शिकायत न करो। मौक़ा पाकर दिल साफ़ कर लो। ज़रा ज़रा सी बात कहने की आदत न डालो वरना ससुराल में गुज़र मुश्किल हो जायेगी।

बड़ी बहन का अदब

बड़ी बहन का अदब करो। हर समय उनकी तकलीफ आराम में शामिल रहो। उनकी ज़रूरत को अपनी ज़रूरत से ज़्यादा समझो। उनकी इच्छा को न तोड़ो उनका साथ देती रहो। जिस काम को कहें उसे टालो नहीं। जो वह करें उस पर एतराज़ न करो। उनसे अपने को बेहतर न समझो। अगर तुम्हारे ख़िलाफ भी करें तो तुम उसका ख़्याल न करो। उनको बराबर पूछती रहो। वह काम जो वह नहीं कर सकतीं तुम्हों आता हो तो कर दो अगर वह घर के कामों में व्यस्त हैं तो तुम उनके बच्चों की ख़बर लो। जो काम करें तो यथासम्भव उन्हें मदद दो। समय समझके, मौक़ा जान के उनको अपने खाने में शरीक रखो या उनको भेजती रहो। उनकी सास नन्दों पर अपनी बहन की तरफ से तानाज़नी न करो कि उसका बदला वह तुम्हारी बहन से लें। तुम कहकर बैठ रहोगी उस बेचारी पर आफ़त आयेगी। और न उनको कोसो। कोसने से तुम्हारी बहन पर ज़ियादती करेंगी। तो गोया तुमने अपने बहन के साथ बुराई की। जो बात वह ख़िलाफ भी करें तो चुपके से सुनलो, दख़ल न दो मगर हाथ बटाती रहो। वह परेशान न होने पायें। यही वक़्त तुम्हें भी पेश आने वाला है। हर काम पर ग़ौर करो। उनकी कोई चीज़ अपने काम में न लाओ। अपनी चीज़ उनके लिए समर्पित (वक़्फ़) कर दो कि किसी को नागवार नगुज़रे। चार के सामने उनसे सरगोशी (कानाफूंसी) न करो कि भ्रम पैदा हो। जो चीज़ उनसे उधार लो या क़र्ज़ के तौर पर लो सबकी मौजूदगी में लो और सबके सामने दो। माल का मामला हो तो उसे भी साफ रखो। अक़्ल से काम लो ताकि शार्मिन्दा न हो।

अनुवाद – मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ १६ का शेष)

भाव अधिक मौजूद था, इसलिए उन्होंने अपने स्वभाव और आचरण से प्रेरित होकर ऐसा किया। मगर उसके बाद के ज़माने में सलीबी खूनी जंगों में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी, मलिक मुज़फ़्फ़र, ज़ाहिर शाह, बबरस, अन्दुलुस के शासक, उसमानी खलीफाओं, हिन्दुस्तान के शासकों और बादशाहों का युद्ध इतिहास, इस प्रकार की घटनाओं और कारनामों से भरा पड़ा है।

समाज सुधार

ग़ीबत : समाज का अत्यन्त कमज़ोर पहलू

मौलाना सईदउर्रहमान आज़मी

सामूहिक रूप से हमारे समाज को जिस चीज़ ने सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुंचाया, वह ग़ीबत (चुग़ली) है। यही वस्तुतः वह रोग है जो हमारे सामूहिक संगठन और सामुदायिक (मिल्ली वहदत) एकता की राह में एक बड़ा अवरोधक है। लेकिन हम ग़ौर करें तो सोसाइटी के प्रत्येक वर्ग और जीवन के हर क्षेत्र में ग़ीबत के करतूत पग पग पर दिखाई पड़ेंगे। और ऐसा प्रतीत होगा कि एक पल के लिए भी जीवन को इससे छुटकारा हासिल नहीं है। ज़बान को इस गुनाह से जो लज़्ज़त हासिल होती है उसका बदल इतनी आसानी के साथ शायद ही किसी और चीज़ में मिल सके। सरकार के सदनों से लेकर झोंपड़ी की घुप अन्धियारी तक और मेहराब व मेम्बर की बुलन्दियों से मैकदों की पस्तियों तक, अच्छी बुरी हर जगह ग़ीबत का साम्राज्य दिखाई पड़ता है।

दैनिक जीवन का विश्लेषण किया जाये तो हमें मालूम होगा कि किस प्रकार जाने–अनजाने में हम यह महापाप करते हैं और किस किस बहाने से हम इससे आनन्द लेते रहते हैं। यद्यपि यही वह गुनाह है जिस की मनाही कुर्आन व हदीस दोनों में विस्तार के साथ बयान की गई है। इस विस्तार का कारण भी कदाचित यही है कि ग़ीबत एक स्वादिष्ट और सहल गुनाह है। इससे उस मानसिक शक्ति को तुष्टि प्राप्त होती है जो बुरे कार्यों की ओर प्रेरित करती है। इससे नफ़्से अम्मारः को फ़रहत हासिल होती है। और 'स्व' की भावना को सुकून मिलता है। अगर बात सिर्फ़ इतनी ही होती और इसे कुप्रभाव व्यक्ति विशेष तक सीमित रहता तो शायद इस का इतना महत्व न होता, किन्तु समाज को इससे जो बिखराव आवश्यमभावी होता है और इसके कारण दिलों में नफ़रत व अदावत की जो भावना पैदा होती है वह बेहद संगीन और एकता की भावना के लिए अत्यन्त हानिकारक है।

ग़ीबत नाम है हर उस बात का जिसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति से हो और उसके पीठ पीछे हम उस बात को इस तरह बयान करें कि अगर वह सुने तो उसको तकलीफ़ पहुंचे। और उसको ख़राब लगे; चाहे वह बात या ऐब (अवगुण) उस व्यक्ति के अन्दर मौजूद ही क्यों न हो। हज़रत अबू हुरैरहः रज़ि० बयान फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सहाबा को सम्बोधित करके फ़रमाया कि जानते हो ग़ीबत किस चीज़ का नाम है ? लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा मालूम है। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम अपने भाई का ज़िक्र इस तरह करो कि वह इसको नापसन्द समझे। सहाबः ने फ़रमाया कि हुजूर ! अगर यह बात उसके अन्दर मौजूद हो तब भी वह ग़ीबत है? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया अगर वह बात उसके अन्दर मौजूद है तो ग़ीबत है, लेकिन मौजूद नहीं होने की सूरत में तो बुहतान है। (मुस्लिम शरीफ़)

हम को सोचना चाहिए कि हम अपने दैनिक जीवन में इस वस्तु स्थिति से कितनी बार दोचार होते हैं और यह घटना प्रतिदिन कितनी बार हमारे साथ घटती है बात केवल इतनी नहीं है कि ग़ीबत हुई, बल्कि वास्तव में इसके साथ साथ एक मुसलमान के दिल में निफ़ाक, नफ़रत, हसद और बुग्ज़ व अदावत के जज़्बात को जगह मिली, ईर्ष्या व द्वेष की भावना को जगह मिली। यही वह भावनायें हैं जो एक जुटता और सामाजिक जीवन के लिए घातक ज़हर है। इनके कारण हमारे जीवन में ऐसी बेबरकती, बेरौनक़ी और निराशा पैदा हो जाती है कि मिल्लत (समुदाय) की ज़िम्मेदारियां तो दूर रहीं हम अपनी स्वयं की ज़िम्मेदारियों के अदा करने और उनका भार उठाने की क्षमता भी नहीं रखते।

अगर आप ग़ीबत की संगीनी और उसकी पहचान का अन्दाज़ा करना चाहें तो कुर्आन की निम्नलिखित आयत के अनुवाद को ध्यान पूर्वक पढ़िये।

अनुवाद – "और न कोई किसी की ग़ीबत करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खावे। इससे तो तुम ज़रूर नफ़रत करोगे।" (सूरः हुजरात–१२)

मरे हुए भाई के गोश्त खाने और ग़ीबत करने में कोई अन्तर नहीं है। लेकिन हम न जाने प्रतिदिन कितनी बार इस गोश्त को खाते और अपनी काम–वासना (नफ़्स) की भावना को तस्कीन देते हैं। हालांकि मुसलमान की शान यह है कि उसकी जुबान और हाथ दोनों से लोग सुरक्षित रहें। जुबान का गुनाह कर्म के गुनाह से कई गुना बड़ा है। इसकी ज़िन्दा मिसाल ग़ीबत, झूठ, चुग्ली आदि में बिल्कुल ज़ाहिर है। ग़ीबत वह जुर्म है जिसके कारण रोज़ा जैसी बरकत वाली इबादत में भी खलल पैदा हो जाता है। और इसके कारण रोज़ा के लाभों से रोज़ादार वंचित कर दिया जाता है। और उसकी भूख–प्यास का कोई हासिल नहीं होता।

हदीस में है कि "रोज़ा एक ढाल है।" लेकिन ग़ीबत इस ढाल को फाड़ देती है। मानो रोज़ा जो इन्सान को हर तरह के गुनाह से सुरक्षित रखता है और उसके लिए ढाल का काम करता है, गीबत उसको फाड़ देती है। और उसके लिए हर गुनाह का दरवाज़ा खोल देती है।

ग़ीबत के बारे में आमतौर से यह समझा जाता है कि ग़लत बात को किसी से सम्बद्ध करके बयान करने और उसपर इल्ज़ाम लगाने को ग़ीबत कहते हैं। और अगर वह ऐब उसके अन्दर मौजूद न हो तो वह बुहतान तराशी है। न कि ग़ीबत। एक हदीस में आता है कि हज़रत आयशा रज़ी० ने एक बार हज़रत सफ़िया रज़ी० के बारे में हज़रत मोहम्मद सल्ल० से कहा कि वह ठिगनी हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस बात पर नाराज़गी जताते हुए फ़रमाया कि आयशा तुमने ऐसी बात कही है कि अगर इसको समुद्र के पानी में मिला दिया जाये तो वह भी बदबूदार हो जाये।

यह बयान ग़ीबत की हक़ीक़त और उसकी संगीनी का अन्दाज़ा लगाने के लिए काफ़ी है, और इसमें सीख और नसीहत का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। काश हमारे सामने यही हदीस हो तो हम ग़ीबत की कल्पना मात्र से ही कांप जायें और हमारे दिल में कभी इसका ख़तरा भी न पैदा हो। मगर अफसोस कि हम जहां और बहुत से सामूहिक महत्वपूर्ण मामलों की अनदेखी करके ज़िन्दगी बसर करने के आदी और अभ्यस्त हो गये हैं वहीं ग़ीबत से भी हमने आंखें बन्द कर ली हैं और इस के नतीजा से बेख़बर होकर हमने इस को अपने जीवन और समाज का एक अटूट अंग बना लिया है।

इस्लामी समाज में ग़ीबत करना और उसका सुनना दोनों हराम हैं। अगर कोई व्यक्ति ग़ीबत करे तो दूसरे को चाहिए कि वह उसको सावधान कर दे और उसकी काट करे और अपनी नापसन्दीदगी ज़ाहिर करे, और अगर वह इसमें कामयाब न हो सके तो विरोध में मजलिस से उठ जाना ज़्यादा बेहतर और मुनासिब है।

अनुवाद – मो० हसन अंसारी

अदरणीय लेखकजन !

आपके लेखों पर धन्यवाद! कृपया आप पन्ने के एक ओर ही लिखा करें। कृपया आप सरल लिखा करें कि हमारे पाठक भाषा कठिन होने की शिकायत कर रहे हैं।

– सम्पादक

(पृष्ठ २० का शेष)

करके) वह मेरी रहमत (दया) से मायूस (निराश) न हों मेरी रहमत से केवल नास्तिक ही मायूस होते हैं"। ये तो अल्लाह की महानता है कि मांगे हम अपनी ज़रूरतें और वह दयालु उसे इबादत में लिखे। इसी तरह हम ये न समझें कि हम पापी हैं वह हमारी कैसे सुनेगा इसलिए किसी और से दुआ करायें ताकि कुबूल हो जब वह शहन्शाह खुद अपनी तरफ बुला रहा है तो हमें उसकी शरण में जाना चाहिए फिर सोचने की बात है अगर वह हम से नाराज़ होगा तो क्या कोई प्रेशर डाल कर काम करवा सकता है कदापि नहीं दुन्या के हाकिम तो मजबूर होते हैं दबाव में काम करना पड़ता है लेकिन खुदा के बारे में ऐसा सोचना भी गुनाह है कि हमारी नहीं सुनता है इस लिए हम दूसरे से प्रेशर डाल कर दुआ कुबूल करवाएं। उस मालिक ने दुआ का दरवाज़ा खोलकर हमें हर एक की खुशामद और प्रेशर से मुक्त कर दिया है हम जब खुलूस और अन्तरात्मा से उसकी तरफ रुख करेंगे तो उसकी रहमत हमारी तरफ दौड़ कर आएगी। अंतिम संदेश वाहक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और समस्त बुजुर्गाने दीन, औलिया उल्लाह ने स्वयं हर हाल में खुदा ही से मांगा है और अपने मुरीदों को भीं उसी से लौ लगाने उसी से मांगने का उपदेश दिया है दूसरों से ख़ासतौर से बुजुर्गों से दुआ कराएं अच्छी बात है लेकिन यह न समझें कि हमारी न सुनी जाएगी। यह बात भी याद रखने की है कि अपने लिए दुआ करने के साथ अपने भाइयों के लिए भी दुआ करें, अपने भाई के लिए दुआ करना बड़ा नेक अमल है उसकी बरकत से अपनी दुआएं भी क़बूल होती हैं।

युद्ध करने वालों के साथ सद्-व्यवहार

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

नबी सल्ल० के जीवन काल में और उसके बाद सहाबा रज़ि० ने जंग के मैदान में शत्रुओं के साथ जो उत्तम व्यवहार किया है और जिस उच्च आचरण का प्रदर्शन किया, उसके नमूने आप ने पढ़े होंगे। आइए उस सुनहरे काल के बाद ही कुछ शिक्षा प्रद घटनाओं को हम उदाहरण के रूप में दोबारा पढ़ लें :

लुबनान के गवर्नर हज़रत अ़ली बिन अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० थे। किसी बात पर ईसाइयों ने विद्रोह कर दिया और बड़ा हंगामा किया। इसके नतीजे में आपसी सम्बन्धों को क्षति पहुंची। गवर्नर ने विद्रोह का दमन करने के लिए जंग की और हालात पर कन्ट्रोल कर लिया। उन्होंने उचित समझा कि कुछ सामाजिक तत्वों को वहां से हटा कर अलग अलग इलाकों में भिजवादें ताकि वे इकट्ठा रह कर दोबारा ऐसा दुस्साहस न कर सकें। आज की प्रगतिशील दुन्या में यह बड़ी ही साधारण सी सज़ा मानी जाती है। गवर्नर के इस कार्य की सूचना शाम के इमाम और फ़क़ीह (धर्म शास्त्री व विद्वान) इमाम औज़ाअी को पहुंची, तो उन्होंने गवर्नर के नाम पर एक पत्र में उनके इस कार्य की कड़ी आलोचना की और लिखा कि लुबनान की पहाड़ियों से ज़िम्मियों (शरण में रखे गए ग़ैर मुस्लिमों) के देश निकाला दिए जाने की सूचना मिली। इनमें वे लोग भी होंगे जो इस विद्रोह में शामिल नहीं हुए। कुछ लोग मारे गए और कुछ लोगों को दूर के क्षेत्रों में भेज दिया गया, मगर उन लोगों का क्या दोष है जो विद्रोह में शामिल नहीं थे और अपने घरों और जायदादों से बेदखल कर दिए गए जबकि अल्लाह फ़रमाता है :

'कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।'

इस पर तुरन्त कारवाई करना ज़रूरी था। नबी सल्ल० का इर्शाद है:

'जिसने उस व्यक्ति पर अत्याचार किया जिस के साथ शान्ति पूर्वक रहने की मुसलमानों के साथ संधि है या जिस किसी से उसकी क्षमता से अधिक काम लिया गया या सामर्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी सौंपी गई तो मैं उससे क़ियामत के दिन झगड़ा करूंगा।' इस नसीहत पर भी अमल करना ज़रूरी था।

गवर्नर को जब यह पत्र मिला तो वह परेशान हो गया। उसने तुरन्त उन सब लोगों को अपने घरों को वापसी की अनुमति दे दी और उसे उस समय तक सन्तोष न हुआ जब तक एक एक आदमी अपने घर वापस न आ गया।

आज कितने मुसलमान दुन्या के देशों में शरणार्थी के रूप में मौजूद हैं। अत्यन्त परेशानी का जीवन बिता रहे हैं। फ़िलिस्तीनियों की समस्या पर विचार करना आवश्यक था ही कि अफ़गानिस्तान के बेकसूर मुसलमान इसी प्रकार अत्याचार व बर्बरता का शिकार हो रहे हैं और बोसनिया हर्जेगोनिया पर पूरी पश्चिमी दुन्या जो अत्याचार ढाए हैं उनकी कल्पना से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कलेजा मुंह को आता है।

हज़रत कुतैबा बिन मुस्लिम का लश्कर ईरान व खुरासान पर विजय प्राप्त करता हुआ तुर्किस्तान में प्रवेश कर रहा है और उसके प्रसिद्ध बड़े शहरों बुख़ारा व समरकन्द की ओर बढ़ रहा है। कुछ क्षणों में दोनों शहर हथियार डाल देते हैं और मुसलमान उन पर कब्ज़ा कर लेते हैं।

ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रहम०) की खिलाफत का काल है। दुन्या के एक बड़े भू–भाग पर उनका शासन है। उनके न्याय की ख्यात दूर दूर तक फैली हुई है। रात के शान्त वातावरण में समरकन्द के ग़ैर मुस्लिम नागरिकों का एक प्रतिनिधिमंडल खलीफ़ा के दरबार में शिकायत करने दमिश्क की ओर चल देता है। ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल्ल अज़ीज़ से प्रतिनिध मंडल का मुखिया कहता है कि मुसलमानों के लश्कर के सरदार कुतैबा बिन मुस्लिम उनके शहर में बलपूर्वक दाखिल हुए और उन्होंने वहां मुसलमानों को आबाद करना शुरू कर दिया है। उन्होंने इस्लामी नियमों के अनुसार न तो इस्लाम की दावत दी, न जिज़्या अदा करने की मांग की, जिससे इनकार के बाद ही जंग की घोषणा की जा सकती थी, परन्तु उन्होंने जंग की घोषणा तक नहीं की और शहर पर कब्ज़ा कर लिया।

खलीफा गवर्नर को एक छोटे से काग़ज पर लिखते हैं : 'मुझे सूचना दी गयी कि समरकन्द की विजय में इस्लामी नियमों का उल्लंघन किया गया

है। इस मामले पर विचार करने के लिए क़ाज़ी नियुक्त करो। यदि मुसलमानों को समरकन्द से निकल जाने का निर्णय लेता है, तो मुसलमान समरकन्द से बाहर निकल आएंगे।'

गवर्नर ने पत्र मिलते ही जमीअ बिन हाज़िर अल बाजी (रहम) को काज़ी नियुक्त किया। उन्होंने जांच की और निर्णय दिया (क़ाज़ी स्वयं मुसलमान थे) कि मुसलमानों को समरकन्द से निकल जाने का आदेश दिया जाए। इसके बाद मसुलमान समरकन्द के लोगों के सामने इस्लाम के तीनों उसूल पेश करें। न मानने की सूरत में जंग की घोषणा करें, ताकि समरकन्द के नागरिक जंग की तैयारी कर सकें और उन पर अचानक हमला न किया जाए।

समरकन्द के लोग यह निर्णय सुनकर चकित रह गए । उन्होंने समरकन्द के इतिहास में ऐसा निर्णय कभी न सुना था, न देखा था। ऐसे न्याय प्रिय गवर्नर व सेना और क़ाज़ी से कभी उनका वासता नहीं पड़ा था। उन्होंने एक आवाज में कहा: 'इस जैसी क़ौम से जंग नहीं की जा सकती' और फिर उनका शासन बड़े गर्व व सम्मान के साथ स्वीकार कर लिया।

इस्लामी सेना ने दमिश्क, मिस्र और शाम के अनेक शहर फतह किए और वहां की ईसाई आबादी को हर प्रकार की सुरक्षा के बदले जिज़्या के रूप में कुछ धन लिया। थोड़े ही समय के बाद मुसलमानों के सेनापति को सूचना मिली कि रूम का बादशाह हिरक़्ल उनके विरुद्ध एक निर्णायक जंग के लिए सेना जमा कर रहा है। सेना पति ने आपस में विचार विमर्श करके यह निश्चय लिया कि यदि हम सब मिलकर रूमी सेना का मुक़ाबला करें तो इसके लिए उनको सब नगर खाली करने होंगे, जिन पर मुसलमानों का शासन स्थापित हो चुका था। अतएव दमिश्क व हमस और दूसरे शहरों से हमारी सेना निकल आए। हज़रत खालिद बिन वलीद ने दमिश्क के नागरिकों को और अन्य शहरों के ज़िम्मेदार लोगों को इकट्ठा किया और कहा कि हमने आपकी मदद व रक्षा के लिए आप लोगों से कुछ माल लिया था। हम इस समय इन शहरों को खाली करके जा रहे हैं और हमलाआवर रूमी सेना से आप की रक्षा नहीं कर सकते, अतः अपनी दी हुई रक़म वापस ले लीजिए।

सारे लोगों ने एक ही स्वर में कहा कि अल्लाह तआ़ला आपको वापस लाए और विजयी करे। खुदा की क़सम आपकी हुकूमत और आपका न्याय रूमियों के जुल्म व अन्याय के मुकाबले में हमें अधिक प्रिय है। खुदा की क़सम वे ज़ालिम यदि आपकी जगह होते तो एक पैसा भी वापस न करते बल्कि जो और जितना माल अपने साथ ले जा सकते, लूट कर ले जाते।

आज सभ्यता के इस काल में शासक यदि किसी स्थान से हटने पर बाध्य होते हैं, तो उसको पूरी तरह ध्वस्त व नष्ट कर देते हैं, ताकि वहां के मूल निवासी किसी प्रकार का कोई लाभ न उठा सकें।

तातारी दुन्या के लिए एक प्रकोप और मुसीबत बन कर प्रकट हुए। कितने ही देशों को तबाह व बरबाद करके उन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। जब वे शाम में दाखिल हुए तो मुसलमानों के साथ अनेक ईसाइयों और यहूदियों को भी बन्दी बना लिया। उस समय के सबसे बड़े विद्वान शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रहम०) तातारियों के सरदार के पास इन कैदियों की रिहाई के लिए बातचीत करने गए। तातारी कमांडर ने पहले तो इनकार कर दिया, फिर केवल मुसलमानों को छोड़ देने के लिए राज़ी हो गए। परन्तु ईसाइयों व यहूदियों को छोड़ने से इनकार कर दिया और कहा कि आप का उनसे क्या सम्बन्ध है? आप तो केवल मुसलमानों के ज़िम्मेदार हैं, केवल उनके बारे में ही बात कीजिए, मैं उनको रिहा किए देता हूं।

शैखुल इस्लाम ने कहा : वे भी हमारे शहर के नागरिक हैं और हम पर उनकी भी ज़िम्मेदारी है, अतः उन सबको भी रिहा कर दीजिए। हम हर व्यक्ति की रिहाई चाहते हैं, चाहे वह मुसलमान हो या ईसाई हो या यहूदी।' शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रहम०) उस समय तक वापस न हुए जब तक कि मुसलमानों के साथ ईसाई और यहूदी कैदियों को रिहा करा के अपने साथ न ले लिया। तातारी सरदार हैरान था कि गैर धर्म वालों के साथ मुसलमानों का इतना बड़ा धार्मिक नेता किस प्रकार दयालुता, सहानुभूति और सद्भाव का व्यवहार कर रहा है।

मुसलमानों ने अपने पूरे इतिहास में दूसरी कौमों के साथ इसी प्रकार की उदारता का प्रदर्शन किया है और युद्ध बन्दियों के साथ क्षमा करने के ऐसे नमूने छोड़े हैं कि इतिहास आज तक चकित है।

पाठकों ! यही व्यवहार इस्लाम के प्रथम काल में किया गया। कहा जा सकता है कि नबी सल्ल० और सहाबा रज़ि० और उस काल के लोगों में दया

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कुर्आन का अध्ययन

ग़लतफ़हमियों का इलाज

मौलाना अब्दुल करीम पारेख़

इस्लाम एक सभ्य एवं शालीन 'दीन' है : याद रखना चाहिए कि इस्लाम सीमित अर्थों में धर्म नहीं बल्कि एक 'दीन' है और 'दीन' कहते हैं पूर्ण जीवन–विधान को। यानी जन्म से लेकर मृत्यु तक और मृत्यु के बाद हश्र व हिसाब के दिन तक। और इसके बाद इंसान के जैसे कर्म होंगे उसी के अनुसार उसे जन्नत या जहन्नम मिलेगी, जहां वे अनन्त काल तक रहेंगे। धर्म बहुत सीमित अर्थ रखता है। धर्म को विचारधारा कह सकते हैं। हिन्दी में इसे कर्तव्य भी कहा जा सकता है। धर्म भी इसी भावार्थ में है। 'दीन' एक बहुत ही व्यापक भावार्थ रखता है। इसीलिए कुर्आन ने कहा :

'बेशक अल्लाह को स्वीकार्य दीन सिर्फ़ इस्लाम (अर्थात आज्ञापालन वाला दीन) है।' (सूरह आले इमरान, आ० १६)

चाहे कोई इस्लाम को माने या न माने यह उसकी मर्ज़ी है। कुरआन में है 'दीन में ज़बरदस्ती नहीं है।' जिसका जी चाहे ईमान वाली ज़िन्दगी कुबूल करे और जिसका जी चाहे इंकार वाली जिन्दगी अपनाए' (१८:१६)। यह बात अल्लाह ने इंसान की अपनी इच्छा पर छोड़ दी है। ज्ञात रहे कि इस्लाम एक दीन यानी पूर्ण जीवन विधान है। बहुत से लोगों ने इस से फूट–फूट कर अलग–अलग धर्म बना लिए और उनके नाम भी अपने–अपने तौर पर रख लिए। यह चीज़ आपको सम्पूर्ण मानव–जाति में दिखाई देगी। अब अगर कोई अन्य धर्म तो क्या स्वयं दीने इस्लाम ज़बरदस्ती किसी पर थोपा जाए तो धरती पर मानव जीवन का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाएगा।

इस्लाम किसी धर्म और जाति के लिए तो क्या बल्कि मुशरिक (बहुदेववादी) लोगों के लिए भी अपमानजनक शब्द प्रयोग नहीं करता। जो लोग मूर्तिपूजक हैं, काल्पनिक देवी–देवताओं को पूजते हैं, सूरज–चांद की भी पूजा करते हैं अल्लाह के नेक बन्दों और कुछ पैगम्बरों जैसे हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर की मूर्तिया बनाकर उनकी पूजा करने लगें और उनसे दुआ करने लगें, अपनी मुसीबत में उन्हें पुकारने लगें–तो ऐसे सब मुशरिकों के बारे में कहता है :

'और अल्लाह के सिवा जिन लोगों से भी ये दुआ करते हैं पुकारते हैं, उन्हें तुम बुरा मत कहो। फिर तो ये भी अज्ञानतावश जवाब में अल्लाह की शान में बेअदबी करेंगे। इसी तरह हम ने हर उम्मत के लिए उनके कर्मों को सुन्दर बना दिया है। अतः इन सब को पलट कर आना उनके रब के पास ही है। फिर वह उन्हें बता देगा कि वे क्या कर्म करके आए हैं।' (सूरह अल–इनआम, आ० १०८–१०६)

आप ग़ौर करें कुरआन के शब्दों पर कि मुशरिक लोग जिन्हें पूजते हैं और जिनसे दुआएं करते हैं उन्हें बुरा कहने से ईमान वालों को मना कर दिया गया है। फिर यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि इस्लाम में अन्य समुदायों के लिए अपमानजनक शब्द इस्तेमाल किए गए हों या अन्य धर्मों से नफ़रत प्रकट की गई हो। कुरआन ने यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है कि अल्लाह के सिवा जिन से ये दुआ करते हैं या पूजते हैं तुम उन्हें बुरा कहोगे तो ज़िद में ये अल्लाह को बुरा कहेंगे। फिर तुम उन्हें बुरा कहोगे। फिर ऐसी ही हरकत वे भी करेंगे। इस तरह बुराई का चक्रचलता रहेगा। हर सम्प्रदाय और हर जाति को अपना अमल अच्छा ही प्रतीत होता है चाहे वह कितना ही असत्य हो। फिर एक दिन सब को लौट कर अपने सच्चे मालिक और रब के दरबार में जाना है ताकि वह अच्छे कर्मों का अच्छा बदला और बुरे कर्मों की सज़ा दे। बहरहाल अच्छी तरह आप ऊपर लिखी आयत के शब्दों पर ग़ौर करें कि जब बुतों को बुरा कहना मना है तो किसी समुदाय, वर्ग या जाति के लिए अपमानजनक शब्द कहना या किसी से नफ़रत करना किस तरह वैध होगा? दक्षिणी भारत के हिन्दू रावण की पूजा करते हैं और राम व सीता को बुरा कहते हैं। जबकि मुसलमानों ने राम को ख़ुदा या भगवान नहीं माना लेकिन न्यायवादी राजा कहते और लिखते रहे। मुसलमानों ने रामायण का तर्जुमा जब अरबी और फ़ारसी में किया तो सीता के लिए शरीफ़, पवित्र

महिला के शब्द इस्तेमाल किए। जबकि बौद्ध धर्म के बड़े–बड़े विद्वानों ने राम और सीता को ऐसी खुली गालियां दीं जिन्हें कोई सभ्य इंसान ज़बान पर नहीं ला सकता।

अन्य धर्मों के विद्वानों की हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इज़्ज़त की है। युद्ध काल में भी धर्म–गुरूओं साधकों, सन्यासियों पर हाथ उठाने की इस्लाम में मनाही है। धार्मिक स्थल नष्ट करने से भी मना किया गया है। लगता है मुसलमान बादशाहों की कुछ हरकतों को सामने रखकर यह सवाल उठाया जाता है। पता नहीं मुसलमान बादशाहों के बारे में जैसी चर्चा है वैसा उन्होंने किया है या नहीं। अगर उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं के विपरीत कार्य किए होंगे तो अपने रब के सामने जवाबदेह होंगे और परलोक में उन्हें इसकी सज़ा मिलेगी। मैं मुस्लिम बादशाहों का समर्थन नहीं करता अपने अमल और अपनी हरकत के वे खुद ज़िम्मेदार होंगे।

कुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथनों में किस जगह अन्य धर्मों के लोगों के लिए अपमानजनक शब्द प्रयुक्त हुए हैं ? अन्य धर्मों से शायद प्रश्न करने वाले का इशारा हिन्दू धर्म की ओर है। इस्लाम का विद्वान होने के नाते मैंने अन्य धर्मों के बहुत से ग्रंथों का अध्ययन किया है और उनके धर्म–गुरूओं से सम्पर्क रखा है। धर्म व मज़हब के मामले में मेरी उनसे वार्ता भी होती रहती है। आर०एस०एस० के एक बड़े नेता बाला साहेब देवरस के आलेख मैंने पढ़े भी हैं और उनके भाषण सुने भी हैं। उन्होंने अपने एक भाषण में स्पष्ट रूप से कहा कि 'हिन्दू धर्म' मज़हब नहीं है, धर्म नहीं है बल्कि एक हिन्दू–सभ्यता है, कल्चर है। मुझे आप बताइये कि हिन्दुओं का जो कल्चर है और उनकी जो सभ्यता है वह आज से १४०० साल पहले कुरआन के नाज़िल होने के ज़माने में अरब में कहां थी ? न ही कोई हिन्दू व्यक्ति या संगठन अरब में उस वक़्त पहुंचा था और न ही हिन्दु धर्म का हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से कोई मुक़ाबला या टकराव हुआ। अलबत्ता मुशरिक लोग थे, कुरैश ख़ानदान के भी थे और अरब के अन्य क़बीलों के लोग भी शिर्क (बहुदेवत्व) और मूर्तिपूजा में लिप्त थे। काबा जो अपने प्रारंभ में ही एक अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया था उसमें लात, मनात, हुबल और अज़ा आदि नाम की मूर्तिया रख दी थीं। अरब के लोग इन्हीं को पूजा करते थे और इन्हीं से अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दुआ करते थे। सीटियां और तालियां बजाते। यही उनकी पूजा–अर्चना थी। कुर्आन में है :

'अल्लाह के घर में उनकी नमाज़ क्या थी बस सीटियां बजाना और तालियां बजाना।' (सूरह अनफ़ाल, आ० ३५)

अज्ञानता काल में कुछ लोग काबा की नंगा होकर परिक्रमा किया करते थे। हमारे देश में आज भी कुछ धर्मों के मानने वाले लोग नंगे रहते हैं। शैतान ने उनहें बहकाया होगा कि जब तू पैदा हुआ था क्या लंगोटी बांध कर आया था? बोला नहीं। तो शैतान ने समझाया होगा कि उतार पायजामा। इन पापों के कपड़ों में अल्लाह के घर की परिक्रमा नहीं कर सकता। अतः निर्वस्त्र होकर परिक्रमा कर। इस तरह इंसानों को शैतान ने धोखा दिया। उस ज़माने में लड़कियों को ज़िंदा दफ़न किया जाता था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) यह सब देखते थे। लेकिन उनके पास उस वक्त कोई रास्ता नहीं था। जैसा कि कुरआन जब आपकी उम्र ४० वर्ष होने पर नाज़िल होना शुरू हुआ तो उसमें कहा गया :

'ऐ मुहम्मद ! हमने आपको इस हाल में पाया कि आपके पास कोई रास्ता नहीं था तो हमने आपको सन्मार्ग दिखा दिया।'

कुरआन नाज़िल होने से पहले अरब के लोग लड़कियों को ज़िंदा दफन कर देते थे औरतें बाज़ार में बिकती थीं। सूदखोरों, पूंजीपतियों और बदमाशों की सांठ–गांठ से क़बाइली ज़िंदगी हिंसा और रक्तपात से भरी थी। क्या ऐसे लोगों को कोई पवित्र और शालीन कहेगा? एक पति के अतिरिक्त अन्य पुरूषों से प्रेमालाप रखने वाली महिला को हम बदचलन क्यों कहते हैं ? इस लिए कि वह बदचलन है।

कुछ मुसलमान अल्लाह को मानने के साथ क़ब्रों में दफ़न बुजुर्गों को सजदा करते हैं, उनसे रोज़ी में बरकत मांगते हैं, औलाद मांगते हैं। यह भी शिर्क हैं हमारे विचार में यह मुसलमान भी अपवित्र हुए । कुछ टीकाकारों ने लिखा है मुशरिक (बहुदेववादी) अपनी आस्था के दृष्टिकोण से अपवित्र होता है, शारीरिक दृष्टिकोण से अपवित्र नहीं होता। इसलिए मुशरिक को छूना, उससे वार्ता करना, उसकी बनाई हुई चीज़ को छूना, ख़रीदना

आदि इस्लाम में मना नहीं है।

ईसाई लोग जो थे तो कुरआन नाज़िल होने से ६०० वर्ष पहले अल्लाह ने उनके लिए हज़रत ईसा (अलै०) पर इंजील नाम की आसमानी किताब नाज़िल की थी। मगर ये भी सिर्फ़ ६०० वर्षों में ही हज़रत ईसा मसीह और इंजील के बताए हुए दायरे से बाहर निकल गए थे। इन ईसाइयों से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मक्का में थोड़ा सा सम्पर्क रहा और मदीना में कुछ ज़्यादा सम्पर्क रहा। आज जिन्हें हम यहूदी के नाम से जानते हैं ये दरअस्ल इस्राईली मुसलमान थे। इन्हें हज़रत ईसा (अलै०) से लगभग ३००० वर्ष पूर्व हज़रत मूसा (अलै०) के माध्यम से तौरेत नाम की आसमानी किताब दी गई थी। मगर ये भी अपने नबी और तौरेत की शिक्षाओं से बड़ी हद तक हट गए थे। इनसे भी मदीना में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का वास्ता पड़ा। इन दो अहले किताब समुदायों का कुरआन में उल्लेख है। फिर मजूस का भी उल्लेख है। मुशरिकों और साबिईन का भी उल्लेख है।

'मजूस' अग्निपूजक यानी आग को पूजने वालों को कहते हैं। 'साबिईन' ये अपने आप को हज़रत याहिया (अलै०) की उम्मत बताते थे और सितारों को पूजते थे। सम्भवतः ज्योतिषि और भविष्यवक्ता भी इसमें आ गए हों।

'मुशरिक' उसे कहते हैं जो अल्लाह को मानने और अल्लाह की इबादत व बन्दगी करने के साथ–साथ अन्य पूज्यों की भी इबादत और बंदगी करे। जैसा कि कुरआन में है:

'और लोगों की बहुल संख्या का यह हाल है कि अल्लाह पर ईमान भी रखते हैं और साथ में शिर्क भी करते हैं (अर्थात अल्लाह का भागीदार और साझीदार भी बनाते हैं)' (सूरह यूसुफ़, आ० १०६)

जैसा कि हमारे ज़माने में बहुत से मुसलमान अल्लाह को भी मानते हैं, इबादत करते हैं और दुआएं मांगते हैं। और इसी के साथ–साथ क़ब्रों में दफ़न बुजुर्गों से भी दुआएं मांगते हैं और उनके नाम से मन्नतें मानते हैं। यह भी एक तरह का शिर्क है। इस्लाम में इसकी भी मनाही है और इससे भी बचने का हुक्म दिया गया है।

इस विवेचना से जान लेना चाहिए कि 'मुशरिक' कोई गाली नहीं है। और आप इसे गाली कह भी नहीं सकते। मुशरिक तो हर उस व्यक्ति को कहा जाएगा जो अल्लाह के साथ किसी को भी भागीदार और साझीदार बनाता हो, चाहे वह व्यक्ति किसी समुदाय से संबंध रखता हो। भले ही जो लोग अपने को मुस्लिम कहलाते हों वे भी अगर शिर्क करेंगे तो वे भी मुशरिक कहलाएंगे।

'मुशरिक' की जो शब्दावली है वह आस्था से संबंध रखती है कि अपने सच्चे मालिक और रचियता के साथ किसी को भी साझीदार और शरीक बनाना। जिस तरह हिन्दू सभ्यता में भी हर उस व्यक्ति को नास्तिक कहा जाता है जो ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता तो क्या आप इसे गाली कहेंगे ? नास्तिकवाद तो बहुत मशहूर है। स्वयं कम्युनिज़्म ने भी नास्तिकवाद को स्वीकारा कि खुदा, ईश्वर आदि कुछ नहीं। इंसान, धरती, आकाश आदि अपने आप उत्पन्न हो गए हैं और अपने आप जीवित होते और मरते हैं। कुरआन में भी ऐसे लोगों का उल्लेख हैं–

'ये लोग कहते हैं कि इसी दुनिया में हमारी ज़िंदगी है, यहीं पर हम मरते जीते हैं और ज़माने की गर्दिश हमें खुद ही विनष्ट कर देती है। ऐसे गलत दावे का इनके पास कोई बौद्धिक प्रमाण नहीं, मात्र अटकल की बात कहते हैं।' (सूरह जासिया, आ० २४)

तो नास्तिकवाद वालों का यही कहना है कि यह दुन्या ही की ज़िंदगी है। यूं ही पैदा होते हैं, जीते हैं, मरते हैं, काल चक्र हमारा नाश कर देता है। जब हमारा शरीर बुढ़ापे से गल जाता है तो मर जाते हैं। कोई परलोक नहीं कोई खुदा नहीं। लेनिन, स्टालिन के ज़माने में यह बात खूब चली। अब भी कम्यूनिस्ट पार्टियों में ढीले–ढाले तौर पर यह बात चल रही है। लेकिन अब वह थोड़े से इस विचार से हटे हैं। इसलिए कि सारी दुन्या के लोग नास्तिकवाद पर सहमत नहीं हो सके और होंगे भी नहीं। इस विवेचना के प्रकाश में मुझे आशा है कि यह बात स्पष्ट हो गई होगी कि अगर किसी को मुशरिक कहा गया है तो वह गाली नहीं है, बल्कि इंसान के आस्था और विश्वास की एक क़िस्म का परिचय है।

जिस शरीर पर सूती वस्त्र होगा उस शरीर पर चर्म रोग कम होंगे। पोलिस्टर और नाइलोन के कपड़े शरीर की रगड़ से अधिक गर्मी पैदा करते हैं, यह अधिक गर्मी चर्म रोग का कारण बनती है। पोलिस्टर औरतों में लिकोरिया भी पैदा करता है।

(साप्ताहिक निदाए मिल्लत)

दुआ (ख़ुदा से प्रार्थना) करने की फ़ज़ीलत

हैदर अ़ली नदवी

उठाऊं हाथ या रब बस तेरी दरगाहे आ़ली में।
काज़िउल हाज़ात है तू ही तेरा दरबार आ़ली है।।

हम और आप इन्सान हैं, खुदा की मख़्लूक़ हैं। जिन्दगी की आख़िरी सांसों तक हमारे आपके साथ आवश्कताएं लगी हैं। मुश्किलें, मुसीबतें आती रहती हैं। यह इन्सान की फितरत है कि वह अपनी हाजात व ज़रूरियात को ऐसी ताकतवर (Powerful) हस्ती के सामने रखता है जिसे वह हाकिम, क़ादिरे मुतलक़ (कर्ता धर्ता) नाफ़े ज़ार (लाभ हानि पहुंचाने वाला) मुईन व मददगार समझता है। लेकिन ला इल्मी (अज्ञानता) या जिहालत की बुन्याद पर बहुत से लोग मख़्लूक़ केसामने या ग़ैर ज़विल उकूल (विवेक हीन निर्जीव) वस्तुओं के सामने हाथ फैलाते हैं । कुर्बान जाइए उस रब्बे जुल्जलाल (संसार के सृजनहार सर्व शक्तिमान ईश्वर) पर जो दाता है खुद फरमा रहा है सुनो कुर्आन के शब्द है "उदऊनी अस्तजिब लकुम" ऐ मेरे सेवको तुम मुझ से मांगो मेरी सरकार में हाथ फैलाओ मैं तुम्हारी सुनूंगा तुम्हारी झोलिया भरूंगा।

प्रिय भाइयो समर्पित हो जाओ ऐसे दाता के प्रति जो खुद दुआ मांगने को कहता है और कुबूल करने का भी वादा करता है। (इन्नल्लाह ला युख़्लिफ़ुल मीआ़द) "वह ईश्वर वादा खिलाफ़ी कदापि नहीं करता है। वादा ख़िलाफ़ी करना तो कमज़ोर प्रदर्शित करता है अर्थात जिस बात का हम वादा करते हैं उसे किसी कारण वश हम पूरा नहीं कर सकते और ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है हर प्रकार की कमज़ोरी से पाक है, लेकिन प्रायः ऐसा होता है कि हम जो मांगते हैं वह नहीं मिलता है तो हम बदगुमान होकर मांगना ही छोड़ बैठते हैं।

कभी ऐसा होता है कि हम नादानी से ऐसी चीजें मांगते है जो अगर हमें प्राप्त हों तो हमारे लिए हानिकारक हों सकती हैं खुदा हमारी समस्त आवश्यकताओं को भली भांति समझता है अतः वह उन्हीं दुआओं को कुबूल करता है जो हमारे लिए लाभदायक हों जिस प्रकार एक वालिद (पिता) अपने बच्चे की हर ज़िद और मांग पूरी नहीं करता बल्कि उसी मांग को पूरा करता है जो उसके वर्तमान भविष्य के लिए उपयोगी हो।

लेकिन ईश्वर का मामला यह है कि वह शर्तों के अनुसार मांगी हुई हर प्रार्थना को स्वीकार करता है अगर मांगी गयी चीज़ हमारे हक़ में मुफ़ीद (लाभदायक) नहीं है तो उसके स्थान पर कोई दूसरी मुफ़ीद चीज़ दे दी जाती है या उसके बदले आने वाली किसी मुसीबत (संकट) को टाल दिया जाता है अगर इनमें से कोई बात नहीं हुई तो उस दुआ का सवाब उसके आमाल नामे में दर्ज कर दिया जाता है जो मौत के बाद के जीवन में उसे मिलेगा जिसे देख कर इन्सान कहेगा काश दुन्या में मेरी कोई दुआ कुबूल ही न होती ताकि आज हमें बहुत अज्र मिलता। इससे मालूम हुआ कि ईश्वर से सच्चे दिल से की गयी दुआ (प्रार्थना) कभी भी बेकार नहीं जाएगी। हम किसी इन्सान से कुछ मांगेगे तो एक दो बार देदेगा बार–बार मांगेगे तो वह नाराज़ होगा मुंह बनाएगा अन्दर कोसेगा लेकिन करीम आक़ा सर्वदाता मांगने से नाराज़ नहीं होता है बल्कि मांगने पर खुश होता है–

तू वह दाता है कि देने के लिए।
दर तेरी रहमत के हैं हरदम खुले ।।

दुआ कोई रस्मी चीज़ नहीं है ये एक इबादत ही नहीं बल्कि इबादत का मग़्ज़ (निचोड़, सार) है ईश्वरदूत मु०स० का कथन है "अद्दुआउ मुख़्खुल् अ़िबादात" दुआ तमाम इबादतों का निचोड़ है दुआ मांगने की बड़ी फज़ीलत कुर्आन व ह़दीस में आयी है ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कथन है "अपनी तमाम हाजतों और ज़रूरतों को अल्लाह से तलब करो यहां तक कि अगर तुम्हारे जूते का तस्मा भी टूट जाए तो भी अल्लाह से इन्तिजाम की दुआ करो" हक़ीक़त भी यही है कि जूते का तस्मा जो मामूली चीज़ है लेकिन अगर ईश्वर की मर्ज़ी नहीं शामिल होगी तो अकेले अपने बल पर हम उसका भी इन्तिज़ाम नहीं कर सकते। जब इन्सान दुआ के लिए खुदा की बारगाह में हाथ उठाता है तो उसका सम्बन्ध अल्लाह से जुड़ जाता है। ये एक अहम इबादत है इसलिए इसे ग़फ़लत से नहीं करना चाहिए। उस महान ईश्वर का संदेश है। "ऐ मेरे वह बन्दो जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया है (यानी खुदा, की नाफरमानी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

आज की तड़पती हुई इंसानियत की पनाहगाह

सैयद मुश्ताक़ अ़ली नदवी

आज हर तरफ़ से न्याय, इंसाफ़, बराबरी, भाईचारगी, दया, अनुकम्पा और ग़रीबों का जीवन स्तर ऊंचा करने की आवाज़ सुनाई देती है। हर देश, हर पार्टी, हर जमात, सभी दृष्टिकोण और दर्शन बड़े ज़ोरोशोर से बल पूर्वक यह झूठे दावे करते हैं कि हमारा उद्देश्य इंसानियत की सेवा करना, उसको उस का जाइज़ हक़ देना, उसके साथ उसकी हैसियत और पद के अनुसार व्यवहार करना है परन्तु अनुभव यह बताता है कि जब किसी को अवसर मिलता है और इंसानियत अपना उपचार और इलाज समझ कर उसके पास पहुंचती है या वह इंसानियत के नाम पर शासन और सत्ता के ऊंची कुर्सियों पर पहुंच जाते हैं, तो फिर उनकी बातचीत का अन्दाज़, सोचने का ढंग, जीवन के रंग ढंग, मामलात, बरताव बिलकुल बदल जाता है और इंसानियत के घाव पर मरहम रखने उस का दर्द दूर करने की कोशिश के बजाए उसके ज़ख़्मों पर और मिर्च छिड़कते हैं और इंसानियत व शराफ़त के सुशील व सुन्दर चेहरे पर बदनुमा, भद्दा दाग़ बन कर उभरते हैं।

और फिर निर्धन, निसहाय, *खानाबदोश इंसानों का* ध्यान कभी नहीं आता हालांकि इन्हीं के नाम पर इस पद पर पहुंचे थे और उनकी आहों, कराहों का वास्ता देकर कुर्सी प्राप्त की थी और अब उनकी आवाज़ बुरी, उनकी सूरत से नफ़रत, उनसे बात करने से परहेज़ और उनका काम करने में शर्म व लज्जा, उसके पास जाने में अपमान मालूम होता है। अब केवल अच्छे मकानों, ऊंचे होटलों बेहतरीन और मज़ेदार खानों, चमकीले भड़कदार लिबासों और दोस्तों तथा मित्रों से वास्ता रहता है और अपनी इच्छा, स्वार्थ पर लाखों इंसानों की इच्छाएं और उनके स्वार्थ को कुर्बान करने में तनिक भी संकोच और चिंता नहीं होती। इसी प्रकार अपने सगे सम्बन्धियों, अपने से उच्च अधिकारियों की चापलूसी में बड़े से बड़े क़ानून का उलंघन, न्याय व इंसाफ़ से अवहेलना, और अधिकार के बेजा प्रयोग से ज़रा भी संकोच नहीं होता। आज इंसानियत सिसक रही है, कराह रही है, दम तोड़ रही है और आस लगाए हुए हैं कि कोई परलोक से रहमत का फ़िरिश्ता बन कर सामने आए और उसकी बीमारी और दुख को दूर करे और ज़ख़्मों पर मरहम रखे।

आज इंसानियत के इस दर्द का उपचार और उसकी इस बीमारी का इलाज इस्लाम और इस्लाम की लाई हुई पवित्र ग्रंथ में ही है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस काल में जिसने भी इस पर अमल किया है, उसकी रस्सी को मज़बूती से थामा है और उसके सिद्धांतों, नियमों को अपनाया है तो उसको आश्चर्यजनक सफलता मिली है और इंसानियत को ऐसी उन्नति और बुलन्दी प्राप्त हुई कि शैतानियत, बर्बरता, डाह, जलन जलभुन कर खाक व खून में तड़पी है।

केवल न्याय, समानता, क़ानून की पाबन्दी, सिद्धान्तों पर अटल रहना, क़ानून की पकड़ में आने के बाद अमीर और ग़रीब, सेवक और मालिक, राजा व भिखारी, अपने और पराए, छोटे बड़े में अन्तर न करने ही को लीजिए कि जो नमूने मुसलमानों ने पेश किये हैं वह आज भी सुनहरे अक्षरों में लिखने योग्य हैं और रहती दुन्या तक मील के पत्थर का काम देते रहेंगे।

मैं नबूवत और ख़िलाफ़त काल की घटनाओं को छोड़ता हूं कि आप कहीं यह कारण न बताएं कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों को मोम और दीने इस्लाम को उनके दिलों के अन्दर रचा बसा दिया था और नबी के साथ ने उनके मनोभाव, अनुभव और विचार को ऐसा जीत लिया था कि इसके अतिरिक्त वह सोचते ही नहीं थे।

मैं नबूव्वत काल के बहुत बाद की कुछ घटनाओं को पेश करता हूं जहां इस्लाम बहुत चक्कर काट कर पहुंचा। मेरा तात्पर्य हिन्दुस्तान से है। यहां के बाज़ मुसलमान बादशाहों ने न्याय व इंसाफ़ की ऐसी अद्भुत मिसालें पेश की हैं जो इतिहास और वर्तमान उन्नति के दौर में मिलना कठिन है।

आठवीं सदी हिजरी में दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह मुहम्मद बिन तुग़लक़ के बारे में मौलाना अब्दुलहई हसनी (रह०) अपनी पुस्तक "नज़हतुल खवातिर" में लिखते हैं कि एक बड़े पुजारी ने काज़ी की अदालत में दावा दायर किया कि बादशाह ने उसके भाई को अकारण कत्ल कर दिया है। चुनानचः क़ाज़ी ने बादशाह को अदालत में हाज़िर होने

का सम्मन जारी किया, तो बादशाह पैदल चल कर बिना हथियार आदि के काज़ी की अदालत में पहुंचा और नियमानुसार सलाम किया और काज़ी के सामने खड़ा हुआ और काज़ी ने उसके विरुद्ध फ़ैसला सुनाते हुए कहा कि आप को मक़तूल के भाई को खून बहा– (कत्ल के बदले माल) देकर राज़ी करना होगा अन्यथा फांसी पर चढ़ना होगा।

चुनानचः बादशाह ने उसको खूं बहा देकर राज़ी कर लिया । इसी प्रकार किसी शाहज़ादे (राजकुमार) ने यह दावा किया कि मुहम्मद बिन तुग़लक़ ने उसको अकारण मारा तो क़ाज़ी ने फ़ैसला दिया कि आप उसे माल आदि देकर क्षमा करा लीजिए या फिर उसको बदला लेने का औसर दीजिए। चुनानचः उस शाहज़ादे को लाया गया और उसको एक छड़ी दी गई। उसने लकड़ी लेकर इक्कीस बार बादशाह को मारा। इब्ने बतूता इस घटना का आखों देखा गवाह है। वह कहता है कि मैंने देखा कि बादशाह की टोपी सिर से गिर गई है।

नवीं सदी हिजरी में दकिन के बादशाह सुलतान इलाउद्दीन बहमनी के बारे में लिखते हैं कि वह जुमा का खुतबा (भाषण) स्वयं देता था। खुतबे में बादशाह ने अपने लिए न्यायी, दयावान और सुशील शब्दों का प्रयोग किया। जब वह इन शब्दों को कह रहा था तो अहसा का एक व्यक्ति खड़ा हुआ जो व्यापार के लिए आया हुआ था और बादशाह ने उस से कुछ घोड़े ख़रीदे थे परन्तु उसके वज़ीरों ने उस समय तक क़ीमत अदा न की थी। उसने कहा खुदा की क़सम न तो तू न्यायी है न दयावान, न ही सुशील और न ही प्रजा पर मेहरबान है। ऐ अत्याचारी ! झूठे बेगुनाह प्राणियों की हत्या करता है और मेम्बर (स्टेज) पर अपने मुंह मियां मिट्ठू बनता है।

बादशाह इसके इन शब्दों से इतना प्रभावित हुआ कि वह वज़ीरों पर बहुत बिगड़ा और डब्डबाई आंखों के साथ घर में चला गया, उसके बाद कभी घर से नहीं निकला। उसका जनाज़ा ही लोगों ने घर से निकलते देखा।

दसवीं सदी हिजरी के प्रसिद्ध क़ाज़ी शक्रुल्लाह सिन्धी के हालात में लिखा है कि हुसैन बिनशाही बेग बादशाह सिन्ध ने किसी व्यापारी से चन्द घोड़े ख़रीदे और क़ीमत देने में टाल मटोल की तो व्यापारी ने क़ाज़ी साहब की अदालत में मुक़दमा दाएर कर दिया। क़ाज़ी साहब ने वारन्ट जारी किया कि बादशाह अदालत में हाजिर हो और व्यापारी के साथ खड़ा होकर मामला पेश करे। चुनानचः बादशाह आया और क़ाज़ी साहब ने व्यापारी के पक्ष में फ़ैसला दिया और बादशाह ने व्यापारी को क़ीमत देकर राज़ी किया।

फिर क़ाज़ी साहब अपनी जगह से उठे और सुलतानी आदाब (शिष्टाचार) बजा लाए। बादशाह उनके बगल में बैठ गया और उनको ख़ंजर दिखाते हुए कहा, "मैं इसको अपने साथ इसलिए लाया था कि तुम मेरे ख़ौफ़ से ज़रा भी हक़ से हटे तो फिर इससे तुम्हारा काम तमाम कर दूंगा। उस पर क़ाज़ी साहब ने अपने तकिये के नीचे से तलवार निकाल कर कहा, "मैं ने भी यह इसलिए रखली थी कि यदि आप ने इस समय अपनी हैसियत से ज़रा भी अवज्ञा की तो इससे ख़बर लूंगा। यह सुनकर बादशाह खुश होकर वापस हो गया।

हमारे शासकों, राजनीतिज्ञों, न्यायधीशों को इन घटनाओं से शिक्षा लेनी चाहिए और इंसानियत के दुखदर्द को दूर कर संसार में शान्ति, अमन व चैन, इंसाफ़ स्थापित करना चाहिए।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

(शेष पृष्ठ १० का)

न तिजारत गफ़लत में डालती है, न क्रय–विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से वह डरते रहते हैं ऐसे दिन में जिसमें दिल और आखें उलट जाएंगी।" (२४:३६,३७)

अनुवाद – "और यह कि मस्जिदें (खास) अल्लाह की हैं,तू अल्लाह के साथ किसी और की ज़िबादत न कर और हर सज्दे की जगह अपना रूख़ सीधा रखा करो, और उसे (अर्थात, अल्लाह को) पुकारा करो, दीन को उसी के वास्ते ख़ालिस करके।" (२६:७)

अनुवाद–"ऐ आदम की औलाद! हर सज्दागाह के मौक़े पर अपना लिबास पहन लिया करो।" (३१:७)

मस्जिदें, बजातौर पर, मुसलमानों के धार्मिक केन्द्र और उनकी शिक्षा दीक्षा, और उनके सुधार व मार्गदर्शन की स्रोत बन गई थीं, इनमें मुसलमानों के सामूहिक व धार्मिक मुआमले हल किये जाते थे, जीवन के विभिन्न संकायों में उनको निर्देश दिये जाते थे। जब कोई बड़ी घटना घटित होती और मुसलमानों को नये निर्देश देने होते तो अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आदेश देते कि मुसलमानों में एलान कर दिया जाये कि आज नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ें।

मस्जिदों को यह केन्द्रत्व व व्यापकता बराबर हासिल रही। सारा जीवन इसी धुरी पर घूमता था। ज्ञान व मार्गदर्शन के स्रोत, सुधार व सन्देश के अभियान सब इसी केन्द्र से पैदा होते और फैलते थे। आज भी इन मस्जिदों में वह पुराना असर बाक़ी है।

अ़दले जहांगीरी

अल्लामा शिबली

कठिन शब्दों का अर्थ

अद्ल–इंसाफ, क़स्र–महल, बाम–कोठा, जलवाफ़िगन – शोभामान, शामतज़दा–आफ़त का मारा, क़दग़न–प्रतिबन्ध, ग़ैरतेहुस्न–सुन्दरता का आत्म सम्मान, कुश्ता–लाश, ग़ैज़–क्रोध, अबरु–ए–अ़दालत–अदालत की पेशानी, शिकन–बल, कनीज़ान–सेविकाएं, शबिस्ताने शाही–शाही विश्राम गृह, सुख़न–बात, नख़वत–गर्व–अभिमान, बआईने हसन–अच्छे ढंग से, नामूसे हया–शर्म की आबरू, तुर्किनों–तुर्क महिलाएं, बिज़न–मार दो, किश्वरे हुस्न–सुन्दरता का राज्य, शर–अ़े–कुहन–पुरानीरीति, जाए सुख़न– बात का स्थान–गुंजाइश, बस्तः–बान्धा हुआ, रसन–रस्सी, तेग बिज न–तलवार चलाओ, ज़मन–ज़माना, अवराक़–पन्ने–पृष्ठ, ग मज़ा–नाज़ो नखारा, अ़र्बद–ए–सब्रशिकन–सब्र को तोड़ने वाला फ़ित्ना, गाम–पग, मुर्गा ने चमन–चमन की चिड़ियां, हामी व शफ़ीअ़–सहायक व दोस्त, खूंबहा–क़त्ल के बदले वारिसों को दिया जाने वाला धन, अमरे हसन– अच्छा कार्य, बच्चा व ज़न–बाल बच्चे, क़िसास–बदला, मुस्तहसन–उचित, सू–तरफ़, मअ़तकिफ़–बैठी हुई, दफ़अ़तन–एक बारगी तू अगर कुश्ता शुदी आहचे, मीकरदममन–अगर तुम क़त्ल कर दी जातीं तो में क्या करता?

क़स्रेशाही में कि मुमकिन नहीं ग़ैरों का गुज़र।
एक दिन नूरजहां बाम पर थी जलवा फ़िग़न।।
कोई शामत ज़दा रहगीर उधर आनिकला।
गरचे थी क़स्र में हर चार तरफ़ से क़दग़न।।
ग़ैरते हुस्न से बेगम ने तमनचा मारा।
ख़ाक पर ढेर था इक कुश्तए बेगोरे कफ़न।।
साथ ही शाहे जहांगीर को पहुंची यह खबर।
ग़ैज़ से आ गई अबरुए अदालत पे शिकन।।
हुक्म भेजा कि कनीज़ाने शबिस्ताने शही।
जाके पूछ आएं कि सच या कि ग़लत है यह सुख़न।।
नख़वते हुस्न से बेगम ने बसद नाज़ कहा।
मेरी जानिब से करो अर्ज़ बआईने हसन।।
हां मुझे वाकिअ़–ए–क़त्ल से इन्कार नहीं।
मुझ से नामूसे हया ने यह कहा था कि बिज़न।।
उसकी गुस्ताख़ निगाही ने किया उसको हलाक।
किश्वरे हुस्न में जारी है यही शरअ़े कुहन।।
मुफ़तिये दीं से जहांगीर ने फ़तवा पूछा।
किशरीअ़त में किसी को नहीं कुछ जाए सुख़न।।
मुफ़तिये दीं ने बैख़ौफ़ो ख़तर साफ़ कहा।
शरअ़ कहती है कि क़ातिल की उड़ा दो गर्दन।।
लोग दरबार में इस हुक्म से थर्रा उठे।
पर जहांगीर के अबरू पे न बल था न शिकन।।
तुर्किनों को यह दिया हुक्म कि अन्दर जा कर।
पहले बेगम को करें बस्त–ए–ज़ंजीरो रसन।।
फिर उसी तरह उसे खींच कर बाहर लाएं।
और जल्लाद को दें हुक्म कि हां तेग़बिज़न।।
यही वह नूर जहां है कि हक़ीक़त में यही।
थी जहांगीर के परदे में शहनशाहे ज़मन।।
उस की पेशानिये पे नाज़ुक पे जो पड़ती थी गिरह।
जा के बन जाती थी औराक़े हुकमूमत पे शिकन।।
अब न वह नूर जहां है न वह अन्दाज़े गुरूर।
न वह ग़म्ज़े हैं न वह अ़र्बद–ए–सब्र शिकन।।
अब वही पांव हर एक गाम पः थर्राते हैं।
जिन की रफ़्तार से पामाल थे मुरग़ाने चमन।।
एक मुजरिम है कि जिसका कोई हामी न शफ़ीअ़।
एक बेकस है कि जिस का न कोई घर न वतन।।
ख़िदमते शाह में बेगम ने यह भेजा पैग़ाम।
खूंबहा भी तो शरीअ़त में है एक अम्रे हसन।।
मुफ़तीये शरअ़ से फिर शाह ने फ़तवा पूछा।
बोले जाइज़ है रज़ामन्द हों गर बच्च–वो–ज़न।।
वारिसों को जो दिये लाख दिरम बेगम ने।
सबने दरबार में की अ़र्ज़ कि "ऐ शाहे ज़मन।।
हमको मक़्तूल का लेना नहीं मंजूर क़िसास।
क़त्ल का हुक्म जो रूक जाए तो है मुस्तहसन।।
हो चुका जब कि शहंशाह को पूरा यक़ीं।
कि नहीं इसमें कोई शाएब–ए–हील–वो–फ़न।।
उठके दरबार से अहिस्ता चला सूए हरम।
थी जहां नूर जहां मुअ़तकिफ़े बैते हज़न।।

दफ़अतन पांव पे बेगम के गिरा और यह कहा।
"तू अगर कुश्ता शुदी, आह चे मी करदम मन ?

अरबों की उत्पत्ति तथा विकास

मो० रफ़ी (रिसर्च स्कालर)

अरबों की उत्पत्ति के बारे में सदैव से भ्रम रहा है परन्तु बहुत से प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा कि अरब लोग सामी जाति के वंशज हैं। बहुत से कथनों के आधार पर यह माना जा सकता है कि हज़रत नूह की संतानों में उनके बड़े पुत्र का नाम साम था। इसलिए उनकी पीढ़ी को सामी नाम से पुकारा गया। हांलाकि लेटिन भाषा में सामी शब्द सिम का पर्याय है। बहुत से भाषा वैज्ञानिकों ने सैमिटिक शब्द का प्रयोग उन जन समुदाय की ओर इंगित किया है, जो अपने जीवन में सामी भाषा का प्रयोग करते थे।

वास्तव में सामी जाति के लोग प्रारम्भ में कलेडियन, असेरियन, तथा हिब्र आदि वर्गों में बंटे हुए थे तथा इनके वर्ग कई पीढ़ी तक चलते रहे। ऐतिहासिक, भाषा वैज्ञानिक तथा भौगोलिक आदि ग्रन्थों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है सामी जाति के यह वर्ग अरब प्रायदीप से ही सम्बन्धित रहे हैं तथा अरब प्रायदीप की जलवायु के अनुसार ही अपना बद्दू रूपी जीवन व्यतीत करते रहे।

परन्तु समय समय के पविर्तन के साथ साथ जब मानव जाति ने अपने जीवन में विभिन्न प्रकारके भौतिक तथा वैज्ञानिक विकासों को स्वीकार किया तो इन सामी वर्गों ने भी इन विकसित नियमों को अपना लिया। ऐसा होना स्वाभाविक ही था क्योंकि विश्व की विकासशील क्रान्ति जो प्रारम्भ हो चुकी थी उसकी छाप पूरी तरह से मध्य एशिया पर पड़ रही थी। इस प्रकार से सामी जाति में भी उद्योग धन्धों का जन्म हुआ और ये लोग भी एक स्थान पर अपना घर बनाकर निवास करने लगे। ये सभी जातियां सामी भाषा ही बोलती थीं इसका प्रमाण इस भाषा में पाये जाने वाले शब्दों से लगाया जा सकता है।

भाषा विज्ञान के प्रसिद्ध लेखक ओ०लेरी ने भी सेमेटिक शब्द का अर्थ दक्षिणी पश्चिमी एशिया के बद्दुओं से लिया। जो जलवायु तथा वातावरण के अनुसार अपने पड़ोसियों से भिन्न जीवन व्यतीत करते थे। अरबों की भांति यहूदियों ने भी प्रारम्भ में ख़ानाबदोशी का जीवन शुरू किया था परन्तु अरबों ने इस परम्परा को कालान्तर तक आत्मसात किये रखा। इस बात से यह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि यहूदी तथा अरब दोनों ही सीमित जाति से सम्बन्धित हैं। योरोप के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो० पी०के० हिट्टी ने इस्लाम धर्म को सेमिटिक जाति का परिपर्तित रूप माना है। निकलसन ने इस घटना के बारे में इस प्रकार वर्णन किया है कि "अरब रेगिस्तानों की विशिष्ट जलवायु तथा वातावरण में जीवन–यापन करने के कारण सेमेटिक लक्षणों को सुरिक्षत रखने में सफल रहे' इसी कारण से इन्हें सामी जाति का प्रतिनिधि के रूप में माना जा सकता है।

विकास :

अरबों में तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि होने के कारण अरब लोग अपना खानाबदोशी का जीवन भुलाकर बड़े–बड़े वर्गों के रूप में अरब के अन्य तटीय क्षेत्रों में अपना निवास स्थापित किया और अपनी घनी बस्तियां बनाकर विश्व की उस धारा से जुड़ गये जिसमें पूर्व से ही सभी जाति बिरादरी के लोग जुड़े हुए थे। अरब इस कार्य में बहुत ही ध्यान देने योग्य हैं। जिन्होंने विश्व की विकसित कला के पीछे अपनी सैकड़ों वर्षों से चली आ रही खानाबदोशी की परम्परा को त्याग कर विश्व बन्धुत्व की भावना को अपना लिया। हालांकि अरबी भाषा सामी भाषा में सबसे नयी भाषा मानी गयी है, फिर भी इस भाषा का प्रयोग विश्व के विकसित देशों में सर्वोपरि है। अरबों को प्रारम्भ से अपनी भाषा पर गर्व था। पूर्व काल में ये अपनी भाषा को अरबी (शिक्षित) तथा अन्य विदेशी भाषाओं को अंजमी (अनभिज्ञ) आदि उच्चारणों के द्वारा परिहास किया करते थे। इन लोगों ने अपनी भाषा में सुदृढ़ता लाने के लिए अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर अपने उच्चारण में प्रयोग करते थे।

प्रारम्भिक काल में अरबों का जीवन पूरी तरह से भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर रहता था। जलवायु तथा मौसम की खराबी के कारण इन लोगों ने कृषि व्यवस्था को त्याग कर पशु व्यवसाय को अपनी जीवका का मुख्य साधन बना लिया था। इसी कारण से इन्हें इधर–उधर भटकना पड़ता था। भौगोलिक

परिस्थिति, जलवायु तथा आर्थिक कठिनाई ने उन सभी जीवन की विचारधारा को बिल्कुल बदल दिया। इनकी विचारधारा में इतना परिवर्तन आया कि वे मात्र अपना व अपने कबीले कां ही हित सोचा करते थे, इसके आगे सोच विचार की शक्ति ही इनके पास न थी। इसके साथ–साथ कठिन जीवन व्यतीत करने के कारण उनमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा वीरता कूट–कूट कर भरी हुई थी। उनके सामाजिक जीवनमें परिवार को एक मुख्य स्थान प्राप्त था। वे साधारण जीवन यापन करते परन्तु स्वाधीनता के प्रेमी थे। उनका सोचना था कि व्यक्ति सबसे अधिक शक्ति अपने व्यक्तिगत कार्यों पर लगाये। वे लोग आतिथ्य सत्कार, वीरता तथा उदारता आदि का प्रदर्शन करते थे, ये आर्थिक दृष्टिकोण से दुर्बल थे, मात्र थोड़े ही लोग व्यापार का मार्ग अपनाये हुए थे। वे अपने हाथ से प्रयोग की वस्तुओं को बनाना बुरा समझते थे इसीलिए इनके कबीले में कोई बड़ा उद्योग–धन्धा स्थापित नहीं हो पाया तथा ये सदा से दूसरों पर निर्भर रहे।

पूर्व इस्लामी काल में अरबों ने स्त्रियों को एक सीमा तक स्वतंत्रता दे रखी थी। समाज द्वारा उन्हें अपने पति का चुनाव करने तथा उसे तलाक (छोड़ने) देने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। समाज के सभी वर्ग मदिरा पान के बहुत ही शौकीन तथा जुआ के आतुर थे। युद्ध करना उनके जीवन का मुख्य अंग बन चुका था। चारागाह तथा जानवरों के प्रति प्रायः युद्ध होते रहते थे। यही नहीं बल्कि उनके जीवन में अनेक बुराइयों ने मुख्य रूप से अपना स्थान ले रखा था। "खून का बदला खून" ही उनका नारा बन चुका था। आतिथ्य सत्कार एवं सौहार्द की भावना भी उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। इसी कारण से ये पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करते और समय–समय पर उनकी सहायता करना अपना परम् कर्तव्य मानते थे।

अरबों में राष्ट्रीय भावना भी कूट–कूट कर भरी हुई थी, इस कारण ये लोग बिना किसी शर्त के एक दूसरे के साथ वफादारी , निष्ठा, प्रेम तथा अच्छे व्यवहार आदि पर अधिक बल देते थे। राष्ट्रीय भावना के कारण ही अरब काफी समय तक एकता के सूत्र में बंधे रहे तथा उन्हें बड़ी से बड़ी कोई वाह्य शक्ति हिला न सकी। इसी विषय पर एक अरबी कवि का कथन है कि "राष्ट्रीय भावना (असबियत) एक ऐसी भावना है जिसके द्वारा ही अरबों को प्रतिज्ञान पालन की शिक्षा प्राप्त होती है" इसके माध्यम से ही एकता की भावना प्रारम्भ होती है और बिखरा हुआ बल इकट्ठा हो जाता है।

परन्तु इस्लाम धर्म के उदय के साथ–साथ सम्पूर्ण अरब राष्ट्र ने अपने हजारों वर्षों से चली आ रही परम्पराओं को त्याग कर एक धार्मिक एकता के झण्डे के नीचे एकत्र हो गये। धर्म तथा एकता ने उनके चरित्र को बिल्कुल बदल दिया। वे हमेशा अपने उद्देश्य में सफल हुए और लगभग एक हजार वर्षों तक वे विश्व विजेता की भांति प्रतिष्ठित रहे। इस्लाम धर्म की सुदृढ़ता के कारण विश्व के बड़े–बड़े पराक्रमी देश–इरान, सीरिया, ईराक, मिस्र, तुर्क, चीन भारत यूरोप आदि क्षेत्र उनके अधीन आ गये। इन देशों ने वहां की धर्म, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक प्रभाव को स्वीकार किया तथा अपने प्रभुत्व को भी बनाये रखा।

अरबों ने इस्लाम के सिद्धान्त व शिक्षाओं को प्राथमिकता देकर विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। अपनी कुशल राजनीति तथा अनुशासन के द्वारा मात्र जनता को ही नहीं बल्कि शासकों को इस्लाम धर्म के नियमों में जकड़ा गया। इस प्रकार हिंसा, चोरी, अशान्ति, लूट–मार, बेईमानी आदि बुराईयों को समाप्त कर एक स्वच्छ समाज की बुनियाद डाली गयी। जाहिल अरब को बुद्धिमान, निर्भीक आदि का रूप देकर उन्हें विश्व के सभ्य राष्ट्रों के मुकाबले के लिए तैयार किया गया।

यही नहीं अरबों ने अपने पराक्रम तथा बाहुबल के द्वारा सिन्धु से स्पेन तक फैले हुए विशाल अरब साम्राज्य में इस्लाम धर्म एवं साम्राज्य का प्रसार किया। विज्ञान तथा साहित्य को एकत्र करने के लिए विभिन्न भाषाओं के ग्रन्थों का अनुवाद कराया। साहित्य के क्षेत्र में प्राचीन काल से अरब अग्रणी रहे यही साहित्य ही उनका ऐसा क्षेत्र बना जिसके द्वारा उन्हें विश्व प्रसिद्ध होने का अवसर मिला।

भाइयो ! इस्लाम धर्म का यह दावा है कि वह सारे मनुष्यों के स्वामी परमेश्वर का भेजा हुआ धर्म है और कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है। उसका यह भी कहना है कि यह कोई नया धर्म नहीं है, बल्कि यह वही धर्म है, जिस का हर देश और हर जाति में परमेश्वर अपने पैग़म्बारों दूतों, सन्देष्टाओं और ऋषियों–मुनियों के द्वारा ज्ञान कराता रहा है। मनुष्यों ने अपने स्वार्थों और तुच्छ इच्छाओं के लिए जब उस ईशधर्म में परिवर्तन और कमी–बेशी कर डाली तो उसे फिर से मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए भेजा। यही वह वास्तविक धर्म है जिसे इस्लाम के नाम से सुशोभित किया गया है।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : बताइये कि ठेके पर ज़मीन का लेना और देना कैसा है ? जिसमें जमीन का मालिक पैदावार से पहले ही एक रक़म (फिक्स) तय कर देता है जबकि पैदावार में कमी ज़ियादती होती रहती है कभी वक्त पर बारिश नहीं होती और कभी फ़स्ल को कीड़ा या बीमारी लगने से पैदावार कम होती है मगर खेती करने वाले को फिक्स रकम जमीन के मालिक को मजबूरन देना ही पड़ता है यह शरीअत के अनुसार कैसा है?

उत्तर : ठेके पर जमीन लेना इजारह है और इसका हुक्म यह है कि ज़मीन के मालिक और ठेकेदार ने जितनी रकम पर इजारह का मामला तय किया उतने पर दुरुस्त हो जाता है और ठेकेदार पर लाज़िम है कि वह रक़म ज़मीन के मालिक को अदा करे पैदावार हो या न हो। अगर उसकी फस्ल अच्छी हो जाये तो ज़मीन के मालिक की उजरत में ज़ियादा नहीं करेगा इसी तरह फस्ल ख़राब होने पर उजरत कम करना मालिक पर भी लाज़िम नहीं हां अगर वह अपनी इच्छा से कम करदे तो कर सकता है।

प्रश्न : आज कल लोग देश–विदेश टेलीफ़ोन करते हैं लेकिन कानून पर अमल न करने की वजह से कुछ लोगों ने इस विषय में विभिन्न तरीके ईजाद कर लिए हैं जैसे लखनऊ से बम्बई कानूनी तौर से एक मिनट का रेट ५० रू० है लेकिन अगर गैर कानूनी तौर पर क़ाइम किये गये पब्लिक काल आफिस से सम्बन्ध जोड़ लिया जाय तो वह ८० रू० के बदले ६ मिनट तक बात चीत करवा देते हैं। अब अवाम जो कि पहले ही से गरीबी और बेकसी की हालत में मुब्तला हैं। तो ज़ाहिर है जब ऐसी सहूलत उस को मिलेगी तो वह उसी की तरफ जाएंगे आप से गुजारिश है कि आप बताएं कि इन हालात में ऐसे तरीक़े से टेलीफोन करना कैसा है?

उत्तर : गैर कानूनी टेलीफोन करने का आमतौर से यह तरीक़ा होता है कि ऐसा करने वाले विभिन्न बड़े–बड़े कारोबारी इदारों की लाइन मिला कर बात करवा देते हैं ज़िसका बिल उन इदारों को मज़बूरन भरना पड़ता है। यह तो ग़ैर की चीज़ से बिना उसकी इत्तिला और इजाज़त के फाइदा हासिल करना है जो नाजाइज़ और हराम है। अतः ऐसे टेलीफोन आफिस से फोन करना भी नाजाइज़ है और आफिस चलाने वालों की आमदनी भी हराम है।

प्रश्न : दाढ़ी के सिलसिले में क्या फ़रमाते हैं इसलिए कि आजकल दाढ़ी मुंडाने या ख़शख़शी कराने का बहुत रिवाज हो गया है।

उत्तर : अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं "बेशक तुम्हारे लिए रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की ज़िन्दगी में बेहतरीन नमूना है।

(सूरः अहजाब आयत नं. २१)

हर वह इन्सान जो अपने आप को हुजूर (सल्ल०) का मानने वाला उनका अनुयाई कहलाता है उसके लिए जिस तरह यह जरूरी है कि आमाल में नबी करीम (सल्ल०) की मुकम्मल पैरवी करे उसी तरह यह भी जरूरी है कि उसकी शक्ल व सूरत नबी करीम (सल्ल०) वाली हो और दाढ़ी रखना तो तमाम नबियों की सुन्नत है हदीसों में दाढ़ी के बढ़ाने की बहुत ताकीद आई है। (मुस्लिम शरीफ भाग एक पेज नं० २६) और दूसरी और हदीसों में जो शब्द प्रयोग हुए है उन सब में दाढ़ी के बढ़ाने का ही हुक्म है। जिसकी व्याख्या 'शरहुल मुस्लिम लिन्नववी भाग एक पेज नं० १२८ में विस्तार पूर्वक है। इन रिवायात से मालूम होता है कि नबी करीम (सल्ल०) की दाढ़ी मुबारक एक मुश्त (मुट्ठी) या उससे भी कुछ ज़ियादह थी।

"अबू दाऊद शरीफ में है कि आप (सल्ल०) वुजू के दौरान दाढ़ी मुबारक का खिलाल फरमाते थे। (बाब तखली लुल्लिहया भाग एक पेज नं०२१) शमाइल तिर्मिज़ी में है आप की दाढ़ी मुबारक इतनी गुन्जान थी कि उसने सीना मुबारक को घेर रखा था।

(शमाइले तिर्मिज़ी पेज नं० ३)

आप (स०) दाढ़ी में अक्सर कंघी फ़रमाते थे। (शिमाइल तिर्मिज़ी)

दाढ़ी का खिलाल, दाढ़ी का सीना को घेरना और दाढ़ी में कंघी करना यह सब बातें इस पर दलालत करती हैं कि आप (सल्ल०) की दाढ़ी मुबारक एक मुश्त (मुट्ठी) या उससे भी बड़ी थी। इसी तरह बुखारी शरीफ की रिवायत में है कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) जब हज या उमरः अदा फ़रमाते तो एक मुश्त से ज़ियादह दाढ़ी को काट देते थे (बुख़ारी भाग २ पेज नं० ८७५) इसी तरह हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) का भी एक मुश्त के बाद काटना साबित है। (रवाहु अबू शैबा फ़ी मुस्नदही) ऊपर की हदीसों से स्पष्ट हो गया कि कम से कम एक मुश्त (मुट्ठी) दाढ़ी रखना वाजिब है और कम रखना मग़रिबी तहज़ीब की नक्काली और उनका शिआ़र है और पूरी दाढ़ी मुंडाना यहूदियों का शिआ़र है।

(दुर्रे मुख्तार भाग २ पेज नं. १२३)

दाढ़ी न रखना खिलाफे सुन्नत और गुनाहे कबीरा है। हुजूर (सल्ल०) ने ऐसे मर्दों पर लानत फ़रमाई है जो औ़रतों के समान बनने की कोशिश करते हैं।

(बुख़ारी भाग २ पेज नं. ८७४)

अतः दाढ़ी के सिलसिले में लोगों की समझाया जाय कि अपनी दाढ़ी को मुकम्मल रखें और दांतों वाली हड्डी के ऊपर जो बाल उगते हैं वह दाढ़ी कहलाते हैं उनसे ऊपर चेहरा (गाल) और नीचे गर्दन के बालों को साफ़ करना दुरुस्त है दाढ़ी में कंघी करें तेल लगाएं संवारें यह नहीं कि बिखेरे और उलझाए रखें।

न स्त्रियां सर मुंडाएं
न मर्द दाढ़ी मुंडाएं।

परमात्मा में कुछ भी आस्था रखते हैं और उससे हमें कुछ भी प्रेम है और इस जीवन के रहस्य को जानने की थोड़ी–सी भी जिज्ञासा और चिन्ता हमारे भीतर मौजूद है तो हमें पूरी गम्भीरता के साथ प्रभु के सत्य मार्ग को खोजना होगा, इस अवस्था में हम को चाहिए कि हम किसी संयमी, विद्वान के संरक्षण में कुर्आन का अध्ययन करें।

Mohd. Aslam

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

स्पर्श चिकित्सा की उपचार पद्धति

इस्लाम धर्म के आईने में

डा० एम सलमान एज़ाज़ी
एम.ए. पी.एच.डी.

नोट : अल्लाह के नबी (स०) द्वारा रोगों के उपचार तथा दुआओं द्वारा समस्याओं के हल में इलाही इरादा होता है, इसमें माद्दी कारण ढूंढना मूर्खता है।

क्या आप यह मानने के लिए तैयार हैं कि पीठ दर्द, सिर दर्द, पांव दर्द, कमर दर्द, गर्दन दर्द, हाथ दर्द तनाव से मुक्ति एवं बहुत से मानसिक रोगों से छुटकारा बिना किसी दवा के हो सकता है? जी हां ! हाथ उठाइये। सहानुभूति पूर्वक एक स्पर्श और बस। आराम की पूर्णतः प्रभावकारी प्रकिया शुरू हो जाती है। छोटी–छोटी बीमारियों से छुटकारा मात्र तीन मिनट के स्पर्श से मिल जाता है। जैसे – सिर का दर्द और तनाव दूर करने तथा सिर की सभी स्थितियों द्वारा पीनियल और पिट्यूटरी ग्रन्थियों का उपचार करने से बीमारी को दूर भगा देता है। बीमारी की अवस्था के हिसाब से कोई अंग विशेष पांच, दस अथवा पन्द्रह मिनट का समय भी ले सकता है। घुटनों के जोड़ों में दर्द, कैंन्सर की गांठ, डायबिटिज़ या पैकियाज़ ऐसे रोग हैं जहां अतिरिक्त समय की ज़रूरत होती है।

मेरा तात्पर्य रेकी की स्पर्श चिकित्सा से है। यह स्पर्श–चिकित्सा की यह उपचार पद्वति मिशीगन, बोस्टन, सैन डियागो, कैलीफोर्निया, लंदन अर्थात अमेरिका तथा यूरोप के विश्व प्रसिद्ध बड़े शहरों में काफी लोकप्रिय है। दूर की बात नहीं हमारे देश भारत के बड़े शहरों में इसके सेन्टर हैं। हमारे देश का बुद्धिजीवी वर्ग तथा उच्च ओहदों से रिटायर्ड अधिकारी गण इस चिकित्सा पद्धति में रूचि रखते हैं और बहुत से स्थानों में सेन्टर खोल कर स्पर्श चिकित्सा द्वारा इलाज कर रहे हैं। परन्तु यह इलाज गरीबों के लिये महंगा है। इसकी फीस प्रति घंटा पांच सौ या उससे अधिक होती है। लेकिन जिन बीमारियों में दस बीस हज़ार खर्च करने से भी फायदा नहीं होता स्पर्श चिकित्सा द्वारा उससे कम खर्च में दर्द रफूचक्कर हो जाता है। (यह भारी फीस अवैध है)

रेकी चिकित्सा पद्धति मूल वज़ायन तन्त्रिका बौद्ध धर्म में है जो जापान में प्रचलित बौद्ध धर्म की एक शाखा है, जिसे शिन्गोन कहते हैं। इसी से रेकी का उदगम हुआ। जापानी शिन्गोन पद्धति के प्रयोगकर्ता डॉ. उसूई ने इसे प्राचीन ग्रन्थ से सन् १८६६ई. में पुनः अविष्कृत किया। यह डाक्टर तथा बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसने चित्त में व्याप्त करुणा भाव के कारण हर व्यक्ति का इलाज करना शुरू कर दिया। भले ही वह बौद्ध धर्म का अनुयायी न हो, और ऐसा आभास होता है कि फिर उसने रेकी स्पर्श चिकित्सा हेतु बौद्ध धर्म की प्राचीन पुस्तकों के आधार पर नवीन पद्धति विकसित की। इसे बौद्ध धर्म की जटिलताओं तथा तन्त्र–मन्त्र से अलग किया फिर भी बहुत सी बातें आज भी प्रचलित हैं। जैसे दीक्षा–संस्कार आदि। डा. उसूई का विचार था कि ऊर्जा चिकित्सा का ऐसा नया स्वरूप विकसित किया जाये जिसके माध्यम से संसार का कोई भी व्यक्ति जाति धर्म या दार्शनिक विचारधारा के बिना उपचार कर सके। संसार में हाथ के स्पर्श द्वारा उपचार करने की अनेक अध्यात्मिक पद्धतियां हैं परन्तु यह एक विशेष विचारधारा के मानने वाले लोगों के लिए ही सीमित हैं। डा० उसूई की प्रतिभा इसलिए विशिष्ट है कि उसने ऐसी उपचार पद्धति विकसित की जिसका किसी विश्वास विशेष से सम्बन्ध न हो। उसने प्राचीन शिक्षा की नई संहिता के नये संस्करण का नाम रेकी दिया।

रेकी के लिए कुछ मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

१. रेकी– एक प्रकार की स्पर्श द्वारा की जाने वाली चिकित्सा है।

२. इस उपचार पद्धति में जीवन शक्ति ऊर्जा के सर्वव्यापी मानते हुए एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने हेतु व्यक्तिगत स्पर्श की आवश्यकता होती है। रेकी एक प्रकार की ऊर्जा चिकित्सा है जिसमें उपचार पहुंचाने हेतु व्यक्तिगत स्पर्श की आवश्यकता होती है। रेकी एक प्रकार की ऊर्जा चिकित्सा है जिसमें उपचार कर्ता के हाथ का कोमल स्पर्श शान्तिमय प्रभाव छोड़ता है जिससे ऊर्जा का प्रभाव बढ़ता है।

३. बीमारी दूर करने की क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति में स्वयं कितनी मात्रा में ऊर्जा का

भंडारण है।

४. दैनिक जीवन में हम अपने शरीर की अपेक्षा अपने मस्तिष्क में अधिक रहते हैं। जिससे शरीर की ऊर्जा का सतत् ह्रास होता है। प्रत्यक्ष स्पर्श एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इस प्रक्रिया को बदलना संभव है। क्योंकि इसमें ऊर्जा का सम्प्रेषण होता है। यह स्पष्ट है कि रेकी चिकित्सा में हाथ के स्पर्श द्वारा ऊर्जा का सम्प्रेषण किया जाता है जिससे बीमारियां दूर हो जाती हैं। परन्तु ऊर्जा का होना अति आवश्यक है क्योंकि जिस मात्रा में ऊर्जा होगी उपचारकर्ता उतनी ही तीव्र गति से बीमारियां दूर भगाने में सक्षम होता है। यह ऊर्जा कहां से अर्जित की जा सकती है? विद्वानों का मानना है कि ऊर्जा प्राप्ति हेतु अध्यात्मिक किया कलापों की आवश्यकता होती है इन तथ्यों को डा० मिकाऊ ऊसूई भी स्वीकार करता है।

जहां तक इस्लाम धर्म का सम्बन्ध है इस में बहुत से ऐसे उदाहरण हैं जहां बीमारियों का इलाज करने हेतु स्पर्श एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूंकि पैगम्बर स.अ.व. ऊर्जा के भंडार थे जिसका उदाहरण उनकी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर मिलता है। आप के हाथों की ऊर्जा का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि आप के पास एक बच्चा लाया गया। पैगम्बर ने उसके सिर पर हाथ फेरा जिसका प्रभाव यह हुआ कि जहां तक हाथ का स्पर्श हुआ था वहां सुनहरे बाल उग आये थे और वह उम्र भर रहे। ज़िन्दगी की अन्य घटनाओं में आप की पत्नी हज़रत आयशा बताती हैं कि जब हम में से कोई बीमार पड़ जाता तो पैगम्बर दर्द के स्थान पर दाहिना हाथ फेरते और कहते, हे ईश्वर! दुख–दर्द दूर कर दे।

ओहद के युद्ध में पैगम्बर के एक साथी हज़रत क़तादा की आंख में चोट लगी जिससे आंख ढलक कर बाहर आ गयी। पैगम्बर ने अपने हाथों द्वारा आंख को पलकों के अन्दर सेट कर दिया। मात्र हाथों के स्पर्श से वह आंख दूसरी आंख से अधिक सुन्दर हो गयी तथा उसकी रोशनी भी दूसरी आंख की अपेक्षा तेज़ हो गयी।

हज़रत साद पुत्र वक्कास कहते हैं कि मैं मक्का में बहुत बीमार हो गया। पैगम्बर मुझे देखने आये तो बातें होने लगीं। फिर उन्होंने अपना हाथ मेरे माथे पर रखा। मेरे मुंह और पेट पर स्पर्श किया और यूं दुआ दी। हे अल्लाह ! साद को अच्छा कर दे। इस हाथ के स्पर्श के प्रतिफल में अपने कलेजे में ठंड महसूस करता हूं और यह उम्र भर कलेजा ठंडा रखने का कारण बना।

इनके अतिरिक्त हज़ारों की संख्या में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें सूफियों, वलियों के हाथ के स्पर्श द्वारा बीमारी से छुटकारा पाने की घटना का वर्णन मिलता है। दांत दर्द, बिच्छू या भिड़ के डंक मार देने आदि से रोते हुए बच्चों और बड़ों को किसी व्यक्ति के द्वारा दर्द के स्थान पर हाथ रखकर कुछ दुआयें पढ़ने और हाथ उठाते ही दर्द के रफूचक्कर होने की घटना को आम तौर से लगभग सभी जगह देखा जा सकता है।

आप यह कह सकते हैं कि यह तो दुआ का प्रभाव है हाथ के स्पर्श का इससे क्या लेना देना ? जी हां ! दुआ का एक–एक शब्द यूनिट था एटम है जिनमें पढ़ने वाले की आन्तरिक भावनायें विद्युतीय लहरें पैदा करती हैं, और यह स्पर्श कर्ता द्वारा बीमारी या दर्द से पीड़ित व्यक्ति में स्वयं प्रभावकारी होता हे। रेकी में भी ऊर्जा का ही सम्प्रेषण होता है। प्रत्येक मुसलमान यह मानता है कि पवित्र कुर्आन की आयतों और दुआओं से अधिक ऊर्जा की प्राप्ति और किसी वस्तु से नहीं हो सकती। फिर तो हमारे लिए यह बेहद आसान है। क्यों न हम इसका भरपूर लाभ उठायें।

क्या एक मुस्लिम होने की हैसियत से आप का यह कर्तव्य नहीं बनता कि अपने पड़ोसियों की छोटी–मोटी तकलीफ़ों को दूर करने में उनकी सहायता करें ? क्या मस्जिद के दरवाज़ों पर अनेकानेक बीमारियों से पीड़ित लोग पंक्तिबद्ध होकर आप से यह अपेक्षा नहीं रखते हैं कि उस सर्वशक्तिमान ईश्वर जिस की आप इबादत करते हैं उसके कुछ कलाम (श्लोक) पढ़कर उन पर फूंक मारें या उनके सिर पर पीठ पर हाथ फेर दे ? क्या पवित्र कुरआन की आयतों को आन्तरिक तथा वाह्य दोनों प्रकार की बीमारी से छुटकारा पाने का साधन नहीं बताया गया ? क्या इस्लाम धर्म के अनमोल रत्न से संसार को फायदा पहुंचाने की ज़िम्मेदारी आप के ऊपर नहीं है ? यदि हां तो पैसा कमाने हेतु नहीं बल्कि समाज सेवा की भावना से इस प्रकार के छोटे–छोटे नुस्खों का ज्ञान पुस्तकों या मुस्लिम विद्वानों से सम्पर्क करके अर्जित करें तथा दस्ते शिफा (स्वस्थ्य करने वाले हाथों) का चमत्कार दिखायें। यह काम आप केवल अल्लाह को राज़ी करने के लिए करें।

पापों से बचने वाला, नमाज़ी व्यक्ति अल्हम्दु की सूरत पढ़कर रोगी पर फूंक मारे तो आराम होगा।

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

जिन्नातों में तबलीग़ :

जो जिन्न ईमान नहीं लाए वह शैतानों ही की भांति हैं। परन्तु पूर्णतया (पूरी तरह) शैतान नहीं हैं। शैतान और उसकी सन्तान तो ईमान से वंचित (महरूम) हैं अब वह ईमान नहीं ला सकते लेकिन शैतान के सिवा ईमान ला सकने वाले जिन्नों तक हक़ बात (अर्थात इस्लाम) पहुंचाई जाए तो ग़ैर मुस्लिम इन्सानों की भांति उनके ईमान ले आने की सम्भावना है। इस्लाम पहुंचाने का कार्य इन्सानों की तरह उनमें भी हो रहा होगा जिस से हम अवगत नहीं हैं।

क्या जिन्न दुन्या की सारी भाषाएं (ज़बानें) जानते हैं ?

ऐसा नहीं है कि चाहे जिस इलाके (क्षेत्र) का जिन्न हो उसके सामने जो ज़बान हम बोलें वह समझ लेगा। अगर वास्तव में ऐसा हो तो हमारे पास इस का कोई प्रमाण (सुबूत) नहीं है। यह तो सम्भव है कि सारी दुन्या के जिन्नों की ज़बान (भाषा) एक हो जैसे जानवरों की जबानें यद्यपि वह ज़बानें नहीं आवाज़ें हैं, बोलियां हैं। मगर उनके लिए वही ज़बानें हैं अतः सारे संसार के जिन्न एक ही बोली बोलते होंगे। जिन्नों का सुनना और बात करना तो पवित्र कुर्आन से सिद्ध है परन्तु उनकी बोली और बात की ध्वनि तथा विधि से हम परिचित नहीं हैं।

जिन्नों में सम्प्रदाय (फ़िर्के)

कुछ महा पुरुषों (बुज़ुर्गों) के कथन से पता चलता है कि जिस प्रकार इन्सानों में फ़िर्के (सम्प्रदाय) हैं जिन्नों में भी फ़िर्के हैं।

''ज़ादुलमसीर फ़ी अिल्मित्तफ़्सीर'' में सूर-ए-जिन्न की तफ़्सीर (टीका) में ''कुन्ना तराइक़ क़िददा'' के अंतर गत लिखा है; फ़र्राअ ने कहा कि जिन्नों ने कहा : हम विभिन्न सम्प्रदायों तथा गुटों में थे। अबू उबैदा ने इस का अर्थ इस प्रकार बयान किया है : ''कुन्ना ज़रूबन् व अजनासन व मिललन'' हम लोग अनेक प्रकार, अनेक जाति तथा अनेक समुदाय के थे।

हसन और सुदी की बात नक़्ल की गई है ''जिन्न विश्वास के अनुसार तुम्हारे ही जैसे हैं। उनमें क़द्री भी है, मुर्जी भी और राफ़िज़ी भी।

क़द्री समुदाय (क़द्रीया) एक समुदाय है जो तक़दीर (भाग्य) को नहीं मानता और कहता है कि बन्दा अपने इरादे से जो चाहे कर सकता है। तकदीर (भाग्य) उसे विवश नहीं करती, जबकि जबरिया के लोग कहते हैं कि बन्दा तकदीर (भाग्य) से मजबूर (विवश) है, खुद से कुछ नहीं कर सकता यह क़दरीया के विश्वास के बिल्कुल उल्टा हैं।

राफ़िज़ी इन्कार करने वाले को कहते हैं। हज़रत ज़ैद बिन अ़ली ज़ैनुल आबिदीन ने उन शीओं को कहा था जिन्होंने हिशाम बिन अ़ब्दुलमालिक के ख़िलाफ़ जिहाद में उनका साथ देने से इन्कार कर दिया था। वास्तविकता यह है कि उन शीओं ने हज़रत ज़ैद से मांग की थी कि हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रजियल्लाहु अ़न्हुमा को बुरा कहो। हज़रत ज़ैद ने इन श्रेष्ठ सहाबा को बुरा कहने से इन्कार कर दिया था। इस पर हज़रत ज़ैद ने उनको ''अन्तुम राफ़िज़ा'' (तुम सब राफ़िज़ी हो) कहा था। तभी से शीओं को राफ़िज़ी कहा जाने लगा। याद रहे कि शीआ़ लोग अपने लिए राफ़िजी बोला जाना पसन्द नहीं करते हैं अल्बत्ता शीआ़ कहते और शीआ़ कहा जाना पसन्द करते हैं शीआ़ का अर्थ जमाअ़त (च्तजल) होता है। शीआ़ लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा (ईमान लाकर रसूल की संगत का लाभ पानेवाले लोग) में भारी मत भेद बताते हैं और अपने को चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अ़ली की पार्टी का बताते हुए अपना नाम शीआ़ अर्थात शीआ़ने अ़ली (अ़ली की पार्टि वाले) रखते हैं। जब कि सुन्नी (अहले सुन्नत) तमाम सहाबा को एक अल्लाह, एक रसूल और एक कुर्आन के मानने वाले और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताए हुए एक मार्ग पर चलनेवाले मानते हैं और उसी मार्ग (सुन्नत) पर चलने में ही नजात मानते हैं।

मुर्जी (मुर्जीया) यह फ़िर्क़ा कहता है कि ईमान लाने के पश्चात पाप (गुनाह) से कोई हानि (नुक़सान) नहीं होता। यह चारों फ़िर्के राफ़िज़ी, क़दरी, जबरी और मुर्जी अहले सुन्नत व जमाअ़त से खारिज (निक्सित) हैं और

बनी इस्राईल के लिए शरीअ़त

आसिफ़ अन्ज़ार

फिर बनी इस्राईल जानवरों वाली जीवन त्याग के मनुष्य की तरह जीवन बिताने लगे। और भले मानस की तरह स्वतंत्र और खुश रहने लगे। अब उनको शरीअत (धार्मिक कानून) की जरूरत पड़ी जो उन्हें जीवन बिताने का सीधा मार्ग (रास्ता) दिखाती। और उनके आपसी झगड़ों का फैसला करती। इसलिए कि इन्सान बगैर अल्लाह के कानून और उसकी प्रदान की हुई रोशनी के इन्सानों की तरह जीवित रहने की ताकत नहीं रखता।

अल्लाह की रोशनी के बिना सारा संसार घोर अंधियारे में है। और वो रोशनी नबियों की शिक्षा की रोशनी है। जिससे लोग सही रास्ता पाते हैं। और जो लोग नबियों के शिक्षा की इस रोशनी के अनुसार अपना जीवन नहीं बिताते वो घोर अधियारे में टामक टोंयां मारते हैं। तो वो जीवन धारा जो इस प्रकाश के बिना हो वो खेल तमाशा बन जाती है। जिस पर बच्चे भी हंसते हैं। क्या आप ने मुशरिकीन, यहूदी ईसाई के अकाइद और मन गढ़न्त देव मालाई किस्से कहानी के बारे में नहीं सुना।

नबियों के लाये हुए प्रकाश के बिना शिक्षा जिहालत शक और अटकलों के सिवा कुछ नहीं और नबियों की प्रकाशित की हुई शिक्षा के बिना चरित्र (अख़लाक़) एक बेकार सी चीज़ है।

आप ने देखा होगा कि जो लोग नबियों की तालीम पर नहीं चलते वो किस तरह दूसरों का हक हड़प जाते हैं और कैसे सारी सीमाएं पार कर जाते हैं और किस तरह वह अपनी इच्छा अनुसार हर काम करते हैं।

और नबियों की इस शिक्षा के बिना स्वराज (हुकूमत) और सियासत (राजनीति) अत्याचार और भ्रष्टाचार हैं। जिससे प्रजा के धन अधिकार और उनके जीवन पर बड़ा जुल्म होता है।

आप ने उन हुक्मरानों को देखा होगा जो अल्लाह से नहीं डरते और दीन पर नहीं चलते वो किस प्रकार अमानतों में ख़ियानत करते हैं। और किस प्रकार से अल्लाह के माल को बेकायदा बरबाद करते हैं। और किस तरह से लोगों को गुलाम बनाते हैं। उनको गुण्डों और गिरोहों में बांट कर इन्सानों का खून करते हैं। और औरतों को जीवित रहने देते हैं। आप अच्छी तरह जानते हें कि पहली और दूसरी जंगे अज़ीम (विश्व युद्ध) में कितने लोग मारे गये। यह सारा संसार अल्लाह की रोशनी के बिना अंधियारे में है। अंधकार पर अंधकार (इतना घोर अंधकार) कि जब अपना हाथ निकालें तो उसे भी न देख सकें और जिसे अल्लाह ही रोशनी न दे तो उसके पास कोई रोशनी नहीं होती।

नबी लोगों को अल्लाह की इबादत (पूजा) का तरीका आपसी रहन–सहन और व्यवहार का सीधा रास्ता बताते हैं। (और) नबी लोगों को दीन पर चलने खाने पीने सोने और मजलिस में बैठने के तरीके सिखाते हैं। (और) उनको तमाम बातें इस तरह सिखाते हैं। जैसे मेहरबान बाप अपने प्यारे बच्चों को सिखाता है। लोग तो छोटे बच्चों की तरह है। जो नबियों की तरबियत और शिक्षा के उससे ज़ियादा जरूरतमंद हैं जितने बचपने में अपने बाप की तरबियत के थे और जो लोग नबी के तरीके पर तरबियत नहीं पाते और अम्बिया के तौर तरीके नहीं सीखते हैं। वो जंगली पेड़ की तरह हैं। जो आप से आप उगता है और बढ़ता है तो आप उसमें हर तरह का ढेढापन, उलझाव और कांटे पायें गे।

वस्तुस्थिति यह है कि आज मनुष्य का सम्बन्ध अपने सृष्टा परमेश्वर से टूट चुका है। मौखिक रूप से वह उसका नाम लेता अवश्य है और उसको मानने का दावा भी करता है, किन्तु मनुष्य का व्यावहारिक सम्बन्ध उस सत्ता से नहीं पाया जाता। और ऐसा शायद इसलिए है कि इस सम्बन्ध को जोड़ने से मनुष्य को अपनी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता खतरे में पड़ती नज़र आती है। यही मूल कारण है कि मानव दानव बन चुका है, धोखा–धड़ी, लूट – खसोट, मार–धाड़ और अश्लीलता उसका धर्म बन चुकी है और अब तो मिट्टी का यह पुतला सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करने का दुस्साहस करने लगा है कि ईश ग्रन्थ और ईशवाणी से तुच्छ स्वार्थों और हितों के लिए बहुत से ईश आदेशों को निकाल दिया जाए। (ईश्वर हमें अपने प्रकोप से बचाए!)

आओ उर्दू सीखें

उर्दू अक्षरों के लिखने के नियम

इदारा

अब तक हमने आरंभ में उर्दू अक्षरों (हर्फ़ों) के शोशे मिलाना सीखा। अब हम को इस बात पर ध्यान देना है कि उर्दू हर्फ़ों के शोशे लफ़्ज़ के बीच में किस प्रकार लिखे जाते हैं। यह बात फिर दुहराई जा रही है कि उर्दू इम्ला के अनुसार दो शब्द मिलाकर नहीं लिखना चाहिए। "उसको" दो शब्द हैं उनको उसको اسکو न लिखकर اس کو लिखें। इसी प्रकार اس نے، اس لئے، اس میں، ان کے، کے لئے मिलाकर न लिखें। इसी प्रकार एक शब्द के जो अक्षर एक दूसरे से मिलाकर लिखे जाते हैं उनको अलग अलग नहीं लिखना चाहिए जैसे तिनका تنکا, तलवार تلوار, बुक़्चा بقچہ, बस्ता بستہ, बिस्कुट بسکٹ या बिस्किट इन शब्दों (लफ़्ज़ों) को इस प्रकार ب س ک ٹ، ب س ت ہ، ب ق چ ہ، ت ل و ا ر، ت ن ک ا न लिखें। उर्दू भाषा के अक्षर का निचला भाग जहां समाप्त होता वह जगह उसकी कर्सी कहलाता है हिन्दी भाषा के तो सभी अक्षर एक लकीर से लकटते हैं उनके लटकने की लम्बाई लगभग समान होती है।

उर्दू यदि मोटे क़लम से लिखें तो दायरे (गोले) वाले सारे अक्षर नियमानुसार उनका निचला भाग सत्र से तनिक नीचे उतर जाता है। इसी प्रकार मीम का नीचे का भाग सत्र से नीचे उतर जाता है। लेकिन फाउन्टेन पेन या डाट पेन से लिखने में सारे हुरूफ़ का निचला भाग सत्र ही पर समाप्त होता है और उसका आकार सत्र के ऊपर ही रहता है। जैसे–अ (अलिफ) ا बा ب जीम ج, दाल د, रा ر, सीन س, तोए ط, अैन ع, काफ़ ک मीम م आदि। और इन हर्फ़ों में शोशे मिलाते समय इसका ख़याल रखते हैं कि शोशा हर्फ़ के इब्तिदाई (आरंभिक) भाग से इस प्रकार मिले कि नियम के अंतर्गत रहे और अच्छा भी लगे। जैसे सच سچ जम جم आदि। यह याद रखना चाहिए कि ऐसा लिखना जो पढ़ा जा सके सरल है लेकिन अच्छी लिखावट अर्थात उर्दू सुलेख एक कला है। जिसे किताब में पढ़कर नहीं सीखा जा सकता बल्कि उस्ताद से समझ कर तथा उसके सामने अभ्यास करने ही से आती है।

बीच में शोशा लाने के नियम में इस बात का ध्यान रखा गया है कि शब्द के अन्तिम अक्षर की कुर्सी न बदले ر، م، ل ज़रा से नीचे हो जाते हैं। अब बीच के शोशों में ب، پ، ت، ٹ، ث، ن، ی के लिए केवल एक शोशा (दांत) बनाते हैं जैसे बीच بیچ, तीस تیس, सैद صید, बेर بیر, सेम سیم, मेल میل।

ج، چ، ح، خ के शोशों के लिए केवल उन के सिर बनाए जाते हैं। ـحـ ـخـ ـجـ ـچـ इन शोशों के बीच में इस प्रकार लिखते हैं कि अन्तिम अक्षर (आख़िरी हर्फ़) की कुर्सी भी न बिगड़े तथा दूसरे अक्षरों की शोभा भी सुरक्षित रहे जैसे خجل, ख़जिल, پیچش पेचिश, پیچک पेचक, ہضم हज़्म, جچی जची आदि।

د، ذ، ر، ڑ، ز، ژ، و के शोशे होते नहीं इनसे पहले हुरूफ़ मिल सकते हैं परन्तु बाद में अलग होकर ही आते हैं, س، ش، ص، ض के शोशे भी उनके सिर होते हैं यह बीच में इस प्रकार आते हैं بسر बसर چشم चश्म قسم क़िस्म आदि। तोए ज़ोए बीच में भी पूरे लिखे जाते हैं जैसे بطخ बतख़ ع، غ बीच में इस प्रकार ـعـ जैसे بیعت बैअत, بغل बग़ल ف ق के शोशे ک जैसे فقر फ़क्र, حفظ हिफ़्ज़ ک، گ के शोशे जैसे مکر मक्र گر मगर के م ل शोशे जैसे جلسہ जलसा حمد हम्द و का शोशा होता नहीं को शोशा बीच लफ़्ज़ में इस प्रकार जैसे سہج सहज شہد शहद आदि।

उर्दू अक्षरों के आकार तथा उनके शोशों की बनावट और उनके मिलाने की विधि का बयान समाप्त हुआ। यह बयान जितना रुचि हीन है उतना ही आवश्यक है। हम अपने उर्दू सीखने वाले पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह इन पाठों को सुरक्षित रखें तथा अगले रुचिकर पाठों की प्रतीक्षा करें। अगला पाठ रुचिकर भी होगा तथा सरल भी।

अन्धविश्वास नहीं तो और क्या ?

मुहम्मद अ़ली जौहर मुज़फ़्फ़रनगरी

आज के इस विकासशील समाज में जहां इन्सान एक उच्च श्रेणी पर है और वह एक सर्वोत्तम प्राणी माना जाता है हर कार्य उसके वश में है वहीं वह कुछ ऐसी बातों पर विश्वास रखता है जिसकी कोई वास्तविकता (असलीयत) नहीं वह बातें अन्धविश्वास के कारण समाज में फैली हुई हैं जैसे उल्लू का बोलना और बिल्ली का रास्ता काट जाना आदि यह सब मन्हूस और अशुभ माना जाता है। मैं आपके सामने एक हदीस शरीफ़ पेश करता हूं जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि इन बातों का शरीअ़त में क्या हुक्म है हज़रत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि अ़दवा (छूत–छात) नहीं है और न तीरः (बुरा शगुन लेना) है और न हाम्मा है, न सफर है ..... . बुख़ारी शरीफ़ किताबुत्तिब बाब ला हाम्मा व ला अ़दवा – अ़दवा का अर्थ है एक रोग का छूने से फैलना जैसे समाज में आज भी बहुत से ऐसे रोग पाये जाते हैं जिनके बारे में यह समझा जाता है कि वह रोग छूने से, पास बैठने से और रोगी के साथ घर में रहने से फैल जाते हैं जैसे कोढ़, एड्स आदि जबकि वास्तव में और मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार भी यह रोग छूने आदि से नहीं फैलते आज से चौदह सौ साल पहले के समाज में भी कुछ गलत बातें पनप रही थीं जिनमें मानवता का खून हो रहा था रोगियों पर कोई दया नहीं करता था उनके करीब कोई नहीं जाता था अगर इस प्रकार का रोगी किसी के पास जाने की कोशिश करता तो लोग उसको दूर भगा देते इस प्रकार की चीज़ों को समाप्त करने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "ला अ़दवा" छूत–छात कोई चीज़ नहीं है। कुछ रोग ऐसे हैं जैसे काल्रा, चेचक कि उनके किटाणु (जरासीम) दूसरों तक पहुंच जाते हैं तो वह भी बीमार हो जाता है। इस से अ़दवा (छूने से फैलना) सिद्ध नहीं होता। अल्लाह के हुक्म बिना दूसरों तक जरासीम नहीं पहुंच सकते अतः किसी रोगी की तीमारदारी से भागना न चाहिए।

ला तीरः –इसका अर्थ है बुरा शगुन लेना, अहले अ़रब शगुन लेते थे उनके समाज में इसके कई तरीके थे उदाहरण के तौर पर वह एक तरकश में सात तीर रखते थे जिनमें से कुछ पर "नअम" अर्थात हां और कुछ पर "ला" अर्थात नहीं लिखा रहता था उन तीरों को हिलाकर पीठ पर बांध लेते और कार्य का इरादा करके वह एक तीर निकालते अगर नअ़म वाला निकल आता तो वह कार्य करते और अगर ला लिखा हुआ निकलता तो वह कार्य नहीं करते और एक तरीका यह था कि वह बाज़ पालते थे उसको चांदनी रात में कार्य का मन में इरादा करके उड़ाते थे अगर वह चांद की तरफ उड़ता चला जाता तो कार्य करते और अगर किसी दूसरी तरफ चला जाता तो वह कार्य नहीं करते थे और कुछ लोग पूरब पश्चिम में बाज उड़ाकर भी शगुन लेते थे इसके विषय में हज़रत मुहम्मद ने इरशाद फ़रमाया कि शगुन लेना कोई चीज़ नहीं है।

ला हाम्मा :– अ़रब में लोग उल्लू को मन्हूस और अशुभ मानते थे। उसकी कर्कश आवाज से भयभीत हो जाते थे और यह मानते थे कि जिस घर पर उल्लू आकर बैठ जाता है उस घर का सर्वनाश हो जाता है और वह यह भी मानते थे कि यदि कोई आदमी किसी की हत्या कर देता तो उसकी आत्मा इस संसार में भटकती रहती है और वह अपने हत्यारों से बदला लेती है और वह किसी भी उल्लू के शरीर में प्रवेश करके अपने हत्यारों की तलाश में भटकती रहती है और अपने हमदर्दों और परिवार वालों की सहायता करती है। हाम्मा का एक अर्थ खोपड़ी भी होती है जिसका तात्पर्य यह होगा कि 'खोपड़ी का घुमाना कोई चीज़ नहीं है जैसा कि आज कल के ओझा और तान्त्रिक करते हैं वह अपने पास एक मानव खोपड़ी रखते हैं आंखें बन्द करके और खोपड़ी को घुमा कर झूठी–मूठी खबरें देते हैं इस सब में कोई वास्तविकता नहीं है।

लासफर :– इसका मतलब यह है अरबी साल का दूसरा महीना जिसका नाम अरबी में सफ़र है इस महीने को अ़रब लोग अशुभ मानते थे अ़रब वाले व्यापारी थे लेकिन सफर के महीने में व्यापार करना तो दूर की बात कहीं आना जाना भी पसन्द नहीं करते

थे न इस महीने में कोई अच्छा काम करते थे। इस सब को खत्म करने के लिए फ़रमाया ला सफ़र। अर्थात सफ़र को मनहूस (अशुभ) मानना गलत बात है।

इस प्रकार की अनेक बातें हमारे देश में भी पाई जाती हैं और बड़े–बड़े पढ़े लिखे इस प्रकार के अंधविश्वास रखते है जैसे : बिल्ली का रास्ता काटना, सुबह उठते ही छींक का आ जाना या कार्य शुरू करते समय किसी वस्तु का गिर कर टूट जाना आदि। एक दुल्हन पर सिर्फ इस लिए अत्याचार होता रहा कि जिस दिन यह व्याह कर आई उस दिन दुल्हे के चाचा एक्सीडेंट में मारे गये थे तो दुल्लह को अशुभ मान लिया गया और उसपर कई वर्षों तक अत्याचार के पहाड़ तोड़े गये जाते रहे।

बिल्ली का रास्ता काटना :– हमारे देश में बिल्ली के रास्ता काटने को भी बहुत महत्व दिया जाता है अगर कोई किसी काम के लिए जा रहा होता है और बिल्ली रास्ता काट जाती है तो उस समय को उस काम के लिए अशुभ माना जाता है और वह कार्य नहीं किया जाता है इसी प्रकार की एक घटना मेरे एक मित्र राकेश के साथ घटी है जब उनके विवाह के लिए लड़की देखने के लिए लड़की वालों के घर जाने लगे तो रास्ते में एक काली सी बिल्ली आगे से गुज़र गयी बिल्ली के गुजरते ही एक हंगामा सा हो गया और आखिरकार अन्धविश्वासी लोग लड़की देखने का इरादा छोड़कर वापिस घर चले आये और फोन पर आज न आने के लिए क्षमा मांग ली और दो दिन बाद का समय रखा लेकिन लड़की वालों के घर पर अतिथियों की एक भीड़ सी हो गयी और उसका काफी पैसा खर्च हुआ और मेहमानों से माफी भी मांगनी पड़ी दो दिन के बाद फिर जब लड़के वाले घर से निकले तो फिर एक भूरी सी बिल्ली रास्ता काट गयी और एक नया हंगामा हो गया राकेश की माता जी कहने लगीं कि बेटा वह लड़की मन्हूस है तभी तो बिल्ली ने दो बार रास्ता काट दिया है और लड़की देखने से इन्कार कर दिया लड़की की शादी दूसरी जगह पर बड़ी धूम–धाम से हुई और लड़का अभी तक कुंवारा है जब बिल्ली का पता लगाया गया तो यह बात खुल कर सामने आई कि उस रास्ते से कुछ हट कर गोश्त मछली की मण्डी है। सुबह–सवेरे अधिकतर बिल्लियां भोजन की तलाश में जाती हैं और छीछड़े आदि खाकर पेट भरती हैं सच तो यह है कि बिल्ली का रास्ता काटना कोई चीज़ नहीं है।

छींक आना :– आम तौर पर सुबह सवेरे उठते समय छींक आ जाती है तो यह माना जाता है कि आज का दिन अशुभ है और उस दिन कुछ लोग तो घर मे बन्द हो जाते हैं न आफिस जाते हैं और न किसी से मिलते हैं इस बात से नुकसान ही नुकसान है और यह लोग सिर्फ एक–दूसरे से सुनकर इस प्रकार के अन्धविश्वास में फंसे हुए हैं।

भविष्य बताना : आम तौर पर ऐसा होता है कि कुछ लोग साधुओं जैसा वेष धारण करके फुटपाथ पर बैठ जाते हैं तो माथे को देखकर या हाथ की लकीरों को देखकर भाग्य बताते हैं और "हस्तरेखा विज्ञान" नाम से एक किताब भी बेचते हैं। जिसमें सिर्फ इन्सानों को बेवकूफ बनाया जाता है और उसका कोई लाभ नहीं होता एक बार मैंने सड़क पर भीड़ देखी मैं भी वहां पर गया तो मैंने देखा कि एक आदमी जो किलीन शेव थे उसने दो तोतों को पिंजरे में क़ैद कर रखा है और उनके पंख काट रखे हैं और उसके पास कुछ लिफ़ाफ़े रखे हैं। जब कोई आदमी अपने भविष्य और भाग्य के बारे में पूछना चाहता है वह आदमी उसका नाम लेकर तोते को पुकारता है तोता पिंजरे से बाहर आता है और कुछ लिफ़ाफ़ों को पकड़ कर छोड़ देता है फिर एक लिफ़ाफ़ा अलग डाल देता है और वह आदमी उसको इस कार्य के बदले दाना खिलाता है और लिफ़ाफ़े से कागज़ निकाल कर उसका भाग्य बताता है और अगर समाधान भी चाहिए तो तोते को दोबारा बुलाया जाता है और इस बार लिफ़ाफ़े की दूसरी तरफस से कागज़ निकालता है जो पहले के मुकाबले में थोड़ा छोटो कागज़ होता है उसमें समस्याओं का समाधान होता है जब मैंने अपने भविष्य के बारे में पूछा तो उसने मुझको अपने पास बिठा लिया और चिकनी–चुपड़ी बातें करने लगा और भीड़ कम होने पर कहने लगा – मौलाना साहब अपना खाने–पीने का धन्धा है आप तो सब कुछ जानते हैं और उसने मुझको लिफाफ़े दिखए तो मालूम हुआ कि अधिकतर उसमें एक दूसरे की फोटो स्टेट हैं और तोता दाना खाने के लालच में आ जाता है आप खुद इस बात को समझ सकते हैं कि इसमें कहां तक सत्य है जबकि भविष्य बताने वाले सिर्फ इसको खाने कमाने का धन्धा मानते हैं इसके अलावा एक चीज़ और जो सड़कों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

संसार को

इस्लाम से जानकारी की आवश्यकता है

इस्लामिक फ़ाउंडेशन लीस्टर में प्रिंस चार्ल्स का महत्वपूर्ण भाषण

यह जानकारी २००३ को इंगलैण्ड के सर्व प्रसिद्ध इस्लामी रिसर्च संस्थान' इस्लामिक फ़ाउंडेशन, लीस्टर की नई इमारत का उद्घाटन इंगलैण्ड के युवराज चार्ल्स ने किया। इस अवसर पर शाहज़ादा चार्ल्स ने जो भाषण दिया उसका प्रसार व प्रचार पूरी तरह किया जाए ताकि इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो ग़लत प्रोपेगंडा किया जा रहा है और उनकी बहुमुल्य शिक्षा सम्बन्धी सेवाओं को झुटलाया जा रहा है उसका पूरी तरह खण्डन हो सके।

"लेडीज़ एण्ड जेन्टिल मेन ! मुझे यहां आकर बड़ी खुशी हुई है क्योंकि बहुत दिनों से इच्छा थी कि इस प्रसिद्ध संस्था को जाकर देखूं जहां न केवल शिक्षा अनुसन्धान, लेखन और संकलन तथा सम्पादन का काम हो रहा है बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के सामने इस्लामी शिक्षा और विभिन्न धर्मों के आपसी सम्बन्धों और सम्पर्कों को बड़े अच्छे ढंग से पेश किया जा रहा है, विशेष रूप से यहां के सामाजिक कार्यकर्ताओं, पुलिस अफ़सरों और लोकल अथार्टी के कर्मचारियों (जिन का ब्रिटेन के मुसलमानों से रोज़ सम्पर्क रहता है) के सामने उनकी सभ्यता व सांस्कृतिक सेवाओं को इस तरह पेश किया जाता है जिससे भाईचारे और आपसी मेल मिलाप में बढ़ोतरी होती है विभिन्न वर्गों को एक दूसरे के बारे में सही सूचनाएं प्राप्त कराई जाती हैं। इस प्रकार यह फ़ाउंडेशन बड़ी लाभदायक सेवा प्रदान कर रहा है। मुसलमानों को भूगोल और दूसरे विषयों से दिलचस्पी रही है और इन क्षेत्रों में उन्होंने प्रशंसा योग्य उन्नति की है। मिसाल के तौर पर योरुप के आधुनिक ज्ञान वर्धन में मुसलमानों के योगदान को कौन भूल सकता है। गिन्ती में अरबी संख्या शून्य का व्यवहारिक विचार यूरोप के मुसलमान हिसाब दानों ने दिया। स्कूल जाने वाले बच्चों को मुहम्मदुल ख़वार्ज़मी का मुख्यतः आभारी होना चाहिए जिन्होंने अलजबरा पर अपनी मशहूर किताब नवीं सदी में लिखी और मुझे अच्छी तरह याद है कि इस किताब का लैटिन भाषा में अनुवाद सन् ११४५ ई० में हुआ। इसी प्रकार अगर इन मुसलमान जहाज़ियों का तजुर्बा और पथ प्रदर्शन न प्राप्त होता जिन्हों ने एटलांटिक सागर को बारबार पार किया तो शायद कोलम्बस नई दुन्या की खोज कभी न कर सकता।

जब से ब्रिटिश द्वीप समूह में मुसलमान रहने और बसने लगे, ब्राईटन जैसी फैशन एबुल जगह में उन्नीसवीं सदी ई० के शुरू में स्नानगार और शेम्पो करने के स्थान नज़र आने लगे। फ़्रेडरिक अकबर मुहम्मद ने जो डाक्टर थे, रक्तचाप (Blood Pressure) नापने की मशीन 'केसर' की ईजाद की जो १८७० में गाई के हस्पताल में प्रयोग की जा रही थी। इस तरह अपने नगर लीवरपूल में मशहूर कानूनदां और परेटक विलयम हेनरी कोलियम ने पहला मुस्लिम स्कूल और यतीमखाना क़ाइम किया। ख़ुद मेरे खान्दान ने इस्लामी शिक्षा से लाभ उठाया। मलका विक्टोरिया जो मेरे कुटुम्ब की प्रतिष्ठित महिला थीं, को उनके घर के एक हिन्दुस्तानी मुलाज़िम अब्दुल करीम ने हिन्दुस्तानी भाषा फ़ारसी लिपि में पढ़ाई जिस से उनको ख़ास लगाव था।

जब ऊथर हाम के लार्ड अहमद को हाऊस आफ़ लार्ड्स का सदस्य बनाया गया तो यहां की मुस्लिम आबादी ने उसका बड़ा स्वागत किया। उन के बाद सौ साल हुए एडरली के एक नव मुस्लिम लार्ड स्टेनली को और अधिक ख्याति प्राप्त हुई। इसी प्रकार १६१३ में लार्ड हेडले ने जब इस्लाम कुबूल करने का एलान किया तो उन्हें असाधारण इज़्ज़त मिली। इस प्रकार हमारे ब्रिटिश समाज के शैक्षिक और सम्मानित क्षेत्रों में मुसलमानों का भाग लेना कोई नई बात नहीं हमें इस का प्रचार करना चाहिए। इस अवसर पर हमें उन सैकड़ों मुसलमानों को भी याद करना चाहिए जिन्होंने ब्रिटिश ताज के लिए पिछली दो बड़ी लड़ाइयों में अपने जानों की कुर्बानी दी। ब्रिटिश जहाजों पर जिन मुसलिम बहादुरों ने जान दी उन की

यादगार लंदन टावर हिल के मर्चेन्ट मेमोरियल में मौजूद है।

ऐसे मूल्यवान धरोहर रखने वाले समुदाय की उच्च शिक्षा के लिए मार्कफील्ड इंस्टीट्यूट की नई इमारत का उद्घाटन करते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है। इस्लामिक फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य उच्च कोटि के शैक्षिक रूचि को आम (सार्वजनिक) करना है जो इसके बानी चेयरमैन और आज के समारोह के मेज़बान प्रोफ़ेसर अहमद की अनथक कोशिशों का नतीजा है। मुझे विश्वास है कि मार्क फ़ील्ड का यह शिक्षा संस्थान, खास कर इस का बेहतरीन पुस्तकालय इस्लाम और मुस्लिम दुन्या की पोस्ट ग्रेज्युएट शिक्षा का प्रसंशनीय केन्द्र सिद्ध होगा और लीसटर के लिए ऐसे शिक्षा संस्थान का होना बड़े गौरव की बात है। आज से अधिक इस्लाम के बारे में अध्ययन और जानने की आवश्यकता कभी नहीं पड़ेगी और इसीलिए मुझे पूरा यक़ीन है कि इस्लामिक फाउंडेशन और उसका उच्च शिक्षा देने वाला मार्कफ़ील्ड इंस्टीट्यूट इस्लामी शिक्षा और ज्ञान का पश्चिम में आदर्श केन्द्र साबित होगा जिसका अनुकरण करना दूसरों के लिए गर्व का आधार बनेगा । मैं हार्दिक प्रसन्नता के साथ इस नई इमारत का उद्घाटन करता हूं।

जामिअ (व्यापक) दुआ

रब्बना अतिना फ़िद्दुन्या हसनतँव्व फ़िल आख़िरति हसनतँव्वकिना अ़ज़ाबन्नार।

(पवित्र कुर्आन)

(पृष्ठ ३४ का शेष)

पर कुछ ज़ियादा ही फैलती जा रही है वह है पत्थर का या अंगूठी के नग का बेचना । इसके बारे में लोगों का मानना है कि अगर किसी के हाथ की अंगूठी में वह पत्थर होगा और कोई मुसीबत उस आदमी पर आती है तो वह पत्थर चटक जाता है या टूट जाता है और मुसीबत को अपने ऊपर ले लेता है इसके बेचने का तरीका यह है कि जो आदमी इसको खरीदना चाहता है उसका नाम लेकर इसको एक स्टील की कटोरी में जिसमें पानी भरा होता है डाला जाता है अगर वह नग चलने लगता है तो उसकी क़िस्मत के लाइक़ समझा जाता है और अगर नहीं चलता तो वह नग उसकी किस्मत के अनुकूल नहीं समझा जाता है और दूसरा नग डाला जाता है अज्ञानता के कारण मैं ने भी कई पत्थर खरीदे लेकिन कोई भी घर आकर पानी में नहीं चला। जब मैं इस बात की तह तक पहुंचा तो मालूम हुआ कि जिस कटोरी में नग डालते हैं उसके पानी में चूना मिला रहता है और चूने की एक हल्की सी परत कटोरी की तली में बैठ जाती है और जब वजनदार नग उस पर गिरता है तो वह फिसल ने लगता है और हल्की सी कटोरी भी तिरछी होती है जो विशेषकर इसी कार्य के लिए बनाई जाती है।

बहुत से युवा इस प्रकार के अन्धविश्वास में पड़कर अपना बहुत पैसा खर्च कर देते हैं और फिर भी उनका कार्य नहीं हो पाता आइये आज से प्रण करें कि इस प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें गे और दूसरे लोगों को भी इस प्रकार के अन्धविश्वास से आवगत करायेंगे।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-508982
Mohd. Miyan Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

0522-508982
अनस मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

आपत्तियों की वास्तविकता

नसीम गाज़ी

अगर कुरआन या इस्लाम की कोई बात किसी की समझ में न आए और वह समझने के लिए कोई प्रश्न या आक्षेप करे तो इसमें कोई हरज की बात नहीं है, लेकिन आमतौर पर कुरआन मजीद की आयतों पर जो आपत्तियां की जाती हैं वे आपत्तिकर्ताओं के किसी अध्ययन या शोध का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने के लिए कुरआन की आयतों का अनुवाद तक ग़लत कर दिया जाता है। आयतों को उनकी पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और सन्दर्भ से विलग करके पेश किया जाता है। इस नीति को कभी भी बुद्धिसंगत और न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता कि किसी धर्म के किसी ग्रंथ से कोई वाक्य नक़ल करके उसके केवल वाह्य एवं शाब्दिक अर्थ को आधार बनाकर आक्षेप कर दिया जाए या उससे ऐसा निष्कर्ष निकाला जाए जो वास्तव में कहने या लिखने वाले का आशय या उद्देश्य न हो। न तो सन्दर्भ को देखा जाए और न उन परिस्थितियों को जिनमें वह बात कही गई है। कुछ संस्थाओं और लोगों की ओर से कुरआन और इस्लाम को बदनाम करने का जो योजनाबद्ध अभियान चलाया जा रहा है, उन्होंने तो इसी ग़लत और अन्यायपूर्ण नीति को ग्रहण किया है। ऐसी नीति अपनानेवालों के बारे में हिन्दू धर्म के महान विद्वान और सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं :

"तात्पर्य जिसके लिए वक्ता ने शब्दोच्चारण या लेख किया हो उसी के साथ उस वचन या लेख को युक्त करना। बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं जो वक्ता के अभिप्राय के विरुद्ध कल्पना किया करते हैं विशेषकर मतवाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है।"

बात को समझने और किसी सही निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए केवल शब्दों और वाक्यों के वाह्य अर्थों ही को नहीं देखा जाता, बल्कि उसका सही अर्थ निर्धारित करने के लिए पूरी बात और पूरी पृष्ठभूमि को सामने रखा जाता है तथा आवश्यकतानुसार विद्वानों और विशेषज्ञों से सम्पर्क भी किया जाता है। यही वजह है कि धार्मिक ग्रन्थों की मोटी–मोटी टीकाएं उनके विद्वानों ने लिखी हैं। अगर यह मामला इतना आसान होता तो फिर टीकाएं लिखने की आवश्यकता ही न होती। यह बात भी देखने में आती है कि एक ही शब्द या वाक्य के विभिन्न अर्थ अपने–अपने शोध और ज्ञान के अनुसार विद्वानों ने लिखे हैं। इसी लिए एक–एक ग्रन्थ की कई–कई टीकाएं विभिन्न विद्वानों के द्वारा लिखी गईं। अतः वेदों की भी अनेक टीकाएं और उनके अनुवाद मौजूद हैं और कुरआन तथा अन्य ग्रन्थों के भी। इस सम्बन्ध में उचित और न्यायसंगत नीति यह है कि किसी बात का कोई निष्कर्ष निकालने से पहले उसकी पृष्ठभूमि और सन्दर्भ को सामनेरखा जाए तथा आवश्यकतानुसार टीकाओं से मदद ली जाए और देखा जाए कि टीकाकारों ने क्या व्याख्या की है। इसके बाद ही कोई निष्कर्ष निकालना उचित होगा। हम अपनी इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए बहुत से उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं, लेकिन विस्तार से बचने के लिए यहां केवल एक उदाहरण ही प्रस्तुत करना काफी होगा :

हिन्दू धर्म के महान विद्वान और वेदों के भाष्यकार व टीकाकार पंडित क्षेमकरण दास त्रिवेदी जी ने अथर्ववेद के श्लोक २०/६३/१ का यह अनुवाद किया कि "वेद–द्वेषियों को नष्ट कर दे।" अगर कोई व्यक्ति या संस्था उक्त श्लोक के वाह्य शब्दों तथा अर्थों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाल ले कि वेद अपने माननेवालों को आदेश देता है कि बौद्धों, जैनियों, सिखों, ईसाइयों, यहूदियों, मुसलमानों और उन असंख्य व्यक्तियों को हलाक व नष्ट कर दिया जाए जो वेदों में आस्था नहीं रखते, तो क्या इस नीति को उचित ठहराया जाएगा ?

यह तो उन धार्मिक ग्रन्थों की बात है जिनके बारे में यह समझा और कहा जाता है कि वे परमेश्वर की ओर से आए हुए हैं और जिनके साथ उनके माननेवालों की आस्थाएं जुड़ी होती हैं, क्या किसी व्यक्ति या संस्था को इस बात की अनुमति दी जा सकती है कि

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

स्वास्थ्य सलाह

डा० एस०एम० आरिफ़ीन

१. डॉ० साहब मुझे डिप्रेशन की शिकायत है। पेट साफ नहीं रहता।

कृष्ण लाल, गाजियाबाद

● आप इग्नेशिया (Ignatia 200) की एक ख़ुराक हफ्ते में एक बार और नक्स वोमिका ३० (Nux Vom 30) की दिन में चार बार लें। आहार में फल व हरे पत्तेवाली सब्जियां भी शामिल करें और दिन में कम से कम आठ गिलास पानी जरूर पिएं।

२. डॉ० साहब मुझे ल्युकोरिया की शिकायत है। ज्यादा काम करने पर कमर में दर्द होता है और बुखार आ जाता है।

कुमारी समरीन, लखनऊ

● आप सीपिया (Sepia 30) और ब्राइनिया (Bryonia 30) को एक–एक खुराक २–२ घंटे पर बदल–बदल कर दिन में छः बार लें। एक महीने तक और साथ में Calcium Tablets एवं Calcium युक्त आहार लें दूध अवश्य लें।

३. डा० साहब मेरी बाईं ओर के यूरेटर (Ureter) में पथरी है। 'बेरबेरिज नाम होम्योपैथिक दवा सुबह शाम ले रहा हूं।

अशरफ लखनऊ

● आपने पथरी का साइज़ नहीं लिखा है, आप Lycopodium 1 M की एक खुराक हर १५ दिनपर लें। और (Sabal Serrulate Q) की १५ बूंद एक चौथाई कप पानी में दिन में चार बार लें और बादी चीज़ों का सेवन न करें। और एक महीने के बाद (Ultrasound) करा के अपनी पूरी समस्या विस्तार के साथ भेजें।

४. डा०साहब मुझे गैस बहुत बनती है और सीने से लेकर गले तक जलन सी महसूस होती है। गैस फंसी रहती है। ऊपर एवं नीचे से किसी भी तरह पास नहीं होती है।

मो० नूर खान, कानपुर

● आप (Kali Be chrom 200) की एक ख़ुराक हफ्ते में एक बार और (Raphenus30) की दिन में चार बार लें। और पानी खूब पियें। बहुत ज्यादा तली, भूनी, नमक, मिर्च, घी और तेल का सेवन कम से कम करें । हरी सब्जियों का प्रयोग करें।

लौंग के लाभ

डा० गीता रानी

१. लौंग एक घरेलू विश्वसनीय डॉक्टर है। मानव–जीवन में इसका विशेष योग है। लौंग के गुणों में कफ–पित्त में रक्त दोषों में सर्दी बुखार नजले में वात नाशक है। हृदय के लिए शक्तिदायक है। लौंग का तेल मसूढ़ों की सूजन, वमन नाशक होता है। लौंग पाचन क्रिया पर सीधा प्रभाव डालकर रस चूसने से दांत के कृति नष्ट होते हैं। आमाशय विकारों को नष्ट करती है। श्वास क्रिया को शक्ति देती है। चेतना शक्ति, याददाश्त को निखारती है। रक्त का शरीर में भ्रमण सुचारू रूप से करती है। त्रिदोष और सन्निपात में घी के साथ लौंग दी जाती है। श्वास क्रिया को शक्ति देती है। मूत्र पिंड मार्ग को निर्मल बनाती है। बार–बार मूत्र जाने के कारण कमजोरी शरीर में हो जाती है उसे कन्ट्रोल करती है लौंग। शरीर से विजातीय द्रव्य पदार्थों को मलमूत्र द्वारा आसानी से बाहर निकालती है। लौंग का तेल गठिया दर्द या सूजन पर लगाने व हल्के–हल्के मालिश करने से लाभ मिलता है।

२. लौंग डालकर पानी उबालकर पिलाने से हर प्रकार का नजला बुखार कन्ट्रोल होता है।

३. लौंग शीत ऋतु में मुंह में डालकर रस चूसने से शीत ऋतु का असर, सर्दी लगने से बचाव होता है।

४. गले में खरास, आवाज बैठने पर लौंग मुंह में रखकर उनकारस चूसा करें। एक दम राहत होगी।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

वे देश के संविधान और नियम एवं दण्ड सहिताओं की पुस्तकों के किसी शब्द या वाक्य के वाह्य अर्थ के आधार पर कोई मनमाना निष्कर्ष ग्रहण कर ले और उसकी पृष्ठभूमि, मार्गदर्शक सिद्धान्तों और उससे सम्बन्धित अन्य धाराओं को सामने न रखे। अगर यह नीति उचित होती तो फिर संविधान एवं नियमों से सम्बन्धित बातों के स्पष्टीकरण, व्याख्या और उनके अर्थ निर्धारित करने के लिए संविधान एवं नियमों के विशेषज्ञों से राय लेने की आवश्यकता ही न पड़ती । अगर धार्मिक या क़ानूनी मामलों के साथ यह सजगता न बरती गई तो गम्भीर और भयावह परिस्थिति पैदा हो सकती है तथा यह नीति आग और पानी से खेलने जैसी हो सकती है।

अमरीका और यूरोप में इन्टरनेट पर इस्लाम से नौजवानों की रुचि

अमरीका और यूरोप के नौजवान भले बुरे में अन्तर रखते हैं इस्लाम के रहनुमा उसूलो (मार्ग दर्शक नियमों) में उनको मअ़क़ूलियत (बुद्धिमता) दिखाई पड़ती है। वह इस्लाम की ओर झुक रहे हैं। वह इस्लाम के विषय में अधिक जानकारी के लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। इन्टरनेट पर **www.jugon.com/penpals** नाम की एक वेब साइट है। यह वेब साइट एक ऐसा प्लेट फ़ार्म है जिसके द्वारा अनगिनत नव मुस्लिम तथा अमुस्लिम नवजवान मर्द तथा औरतें इस्लाम के विषय में ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। उनमें से कुछ भाग्यवानों का उल्लेख किया जाता है।

सोसान (**Susan**) एक ग़ैर मुस्लिम जरमन हैं वह भाष शास्त्र की छात्रा हैं। यह किसी जानकार से इस्लाम के विषय में अपनी जानकारी में वृद्धि (इज़ाफ़ा) चाहती हैं।

www.islam.ws/penpals/detail, id-5658

आइशा ख़दीजा का सम्बन्ध अमरीका से है। यह नवमुस्लिमा हैं। इनको एक ऐसी बहन की ज़रूरत है जो इनको क़ुर्आन और अ़रबी पढ़ा सके ताकि यह दुन्या तथा आख़िरत (परलोक) शान्तिमय जीवन बिता सकें। **www.islam/penpals/detail.php, id= 5653**

ज़रफ़िशां (**Zur Fishan**) का सम्बन्ध इंग्लैण्ड से है। यह भी एक नव मुस्लिमा हैं। इनको खुशी है कि अल्लाह के करम से इनकी पहुंच एक ऐसे वेबसाइट तक होगई है जिसके द्वारा यह योग्य तथा बुद्धिमान लोगों से बात कर सकें। इनको इस्लाम की मअ़क़ूलियत (औचित्य) पर बात करना बहुत पसन्द है। **www.islam.ws/penpals/detail.php? ID=5642**

हागर (**Hagar**) मिस्र में रहती हैं। इनका जन्म कनाडा में हुआ। कालेज की छात्रा हैं। इनकी कोशिश है कि यह अधिक से अधिक अल्लाह के निकट हो जाएं। यह दूसरी बहनों से इस्लामी बातों पर बात चीत करना चाहती हैं। **www.islam.w/spenpals/detail.php? ID=5594**

देरीज़ (**Therese**) एक युवती हैं। यह स्वीडन (**Sweden**) की रहने वाली हैं। तीन साल पहले मुसलमान हो गईं इनका कहना है कि कोई अल्लाह तआ़ला, क़ुर्आन तथा दूसरी धार्मिक बातों पर बात चीत करना चाहे तो वह उसके लिए तैयार हैं। उन्हें ई–मेल कर सकता है। **www.islam.w.s./penpals/detail php? ID= 5647**

लैला, इंग्लैण्ड की रहने वाली हैं। इनको मुस्लिम बहनों से इस्लाम के सम्बन्ध में बात चीत करना पसन्द है। यह परदा करती हैं और नक़ाब पहनती हैं। यह अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करती हैं कि वह सब को सीधे रास्ते पर चलाए। **www.islam.ws/penpals/detail php ? Id=4598**

नीलोफ़र तुर्की की हैं। यूनिवर्सिटी की छात्रा हैं। इनका कहना है कि अल्लाह तआ़ला हमारी दुआ़ ज़रूर सुनेगा। हम को चाहिए कि हम अपंगों, अनाथों, निर्बलों, बूढ़ों ज़रूरत वालों, बच्चों, बेघर इन्सानों आदि की सहायता करें। **www.islam.ws/penpals/detail php? Id=5654**

इसी प्रकार **www.islam.ws/penpals/detail php? Id=5656** पर इंग्लैण्ड की फ़ौजिया से **www.islam.ws/penpals/detail php? Id=5648** पर सिंगापुर के अब्दुल से, **www.islam.ws/penpals/detail php? Id=5644** पर इंग्लैण्ड की ज़ुलेख़ा से तथा **www.islam.ws/penpals/detail php? Id=5594** पर अमरीका के हीटर (**Heather**) से इस्लाम के सम्बन्ध में बात चीत की जा सकती है यह सब नव मुस्लिम हैं।

इन्टर नेट पर इस्लाम के फैलने की इस वेबसाइट पर यह सब केवल एक दिन के मिम्बर हैं। अगर आप हर रोज़ यह वैब साइट खोलें तो ज्ञात होगा कि यूरोप, अमरीका में प्रति दिन दो दरजन नव युवक इस्लाम में प्रवेश करते हैं।

ईसाई जगत में इस्लाम की बढ़ती हुई लोकप्रियता विशेषतया नव जवान लड़कों लड़कियों में ११ सितम्बर की दुर्घटना के पश्चात आई है। आश्चर्य की बात है कि एक ओर इस्लाम के विरोध में मीडिया रात दिन एक किये हुए हैं दूसरी ओर नवजवानों का इस्लाम से सम्बन्ध बढ़ता तथा दृढ़ होता जा रहा है और इस्लाम बढ़ता जा रहा है।

इस्लाम एक सत्य है और सत्य प्रभावित करके रहता है।
(साप्ताहिक निदाए मिल्लत)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● वाशिंगटन गुवांटा नामूबे क्यूबा में अमरीकी मिलिट्री पुलिस के निदेशक को जांच में हस्तक्षेप पर उनके पद से हटा दिया गया है। ब्रिगेडियर रिकबेकूस को जांच करताओं की हिरासत में बन्दियों से दुर्व्यवहार पर आपत्ति थी। अमरीकी समाचार पत्र वाशिंगटन पोस्ट के अनुसार उन पर उच्च अधिकारियों के साथ सहयोग न करने और हिरासत में अलक़ाएदा तालबान से जांच में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया गया है। इधर गुवांटानामूबे में खाड़ी कैदियों की सुरक्षा के लिए अरब वकीलों की टीम जल्द ही अमरीका जाएगी। १९६९ई० में जनेवा संधि के अनुसार कार्यवाही करने की मांग करेंगे और अरब वकला युद्ध बन्दियों को उनके देशों को सौंपने पर ज़ोर देंगे। स्पष्ट है कि ३४ देशों के लगभग ६०० शहरी गुवांटा नामूबे में बन्दी हैं। उनमें १५० सऊदी, ८५ यमनी, १२ कुवैती, ७ बहरेनी, २ आस्ट्रेलियन और एक पौलैण्ड, फ्रांस के नागरिक हैं जो सबके सब अरब के मूल निवासी हैं। अरब वकीलों की टीम को पता चला है कि तमाम बन्दियों के साथ जांच पूरी हो चुकी और किसी के खिलाफ़ कोई प्रमाण नहीं मिला।

● अमरीका के बुश प्रशासन के अनुसार अफ़गानिस्तान में नियुक्त अमरीकी कमांडर ने तालिबान और अलक़ाएदा के सदस्यों के विरुद्ध स्पेशल आप्रेशन प्रारम्भ करने से इन्कार कर दिया । अमरीकी समाचार पत्र वाशिंगटन टाइम्स के अनुसार अमरीकी फौजी कमाण्डरों का कहना है कि इस स्पेशल आपरेशन से अमरीकी फौजियों के मारे जाने का भय है। इसलिए वह इसमें भाग नहीं लेंगे। फौजी सूचनाओं के अनुसार कई बार अमरीकी फौज को गुप्तचर एजेंसियों ने तालिबान नेता मुल्ला उमर के बारे में रिपोर्ट दी लेकिन अमरीकी कमांडरों ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि इन रिपोर्टों में सच्चाई नहीं है और दूसरे यह कि इन आप्रेशनों में फ़ौजियों के मरने की सम्भावना है। अलक़ाएदा और तालबान के विरुद्ध आप्रेशन की योजना बनानेवाली अमरीकी फ़ौज की ग्रीन–बीरेट ए टीम ने मुल्ला उमर अलकाएदा सदस्यों को पकड़ने या मारने के लिए कई योजनाएं बनाईं लेकिन टास्कफ़ोर्स १८० ने इस पर अमल करने से इन्कार कर दिया । टास्क फोर्स १८० अमरीकी फ़ौज का एक दस्ता है जो बगराम एयरबेस पार नियुक्त है और आप्रेशन में भाग लेता है।

सऊदी अरब शाहजादा वलीद बिन तलाल बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कुर्आन मजीद का अलबानवी भाषा में अनुवाद कराकर इसकी चालीस हज़ार प्रतियां प्रकाशित करने के लिए अपने निजी फण्ड से धन दिया है।

उन्होंने अलबानवीं अनुवाद के साथ कुर्आन मजीद के प्रकाशन के लिए ३३ लाख रियाल भी अदा किये हैं। अलबानवी भाषा में अनुवादित कुर्आन मजीद को हज के अवसर पर अलबानवी हाजियों में बांटा गया।

शाहज़ादा वलीद सऊदी अरब के अतिरिक्त दूसरे देशों में मस्जिद इस्लामी सेंटर और जन उद्घार की योजनाओं के लिए ६ करोड़ डालर आवंटन किये हैं जो विभिन्न मदों में ख़र्च किया जाएगा।

गुलामाने मुहम्मद हैं

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

मुसलमां हम हैं गुल्हाए,
गुलिस्ताने मुहम्मद हैं।
खुदा के नाम लेवा हैं,
गुलामाने मुहम्मद हैं ।।
ज़िहे क़िस्मत दिलो जां से,
फ़िदायाने मुहम्मद हैं।
ज़बाने गुल फ़िशां से हम,
सना ख़्वाने मुहम्मद हैं।।
किया करते हैं रोशन,
हर नफ़स ज़ुल्मत कदे दिल के।
लिये हाथों में अपने,
शम्अे अ़िर्फ़ाने मुहम्मद हैं।।
नहीं इहसान हम पर,
इस जहां के रहने वालों का।
खुशा क़िस्मत कि हम,
मम्नूने इहसाने मुहम्मद हैं।।
बचाए गा हमें अल्लाह,
कुफ्रो शिर्को बिद्अ़त से।
कि हम दर्बाने खुश किर्दारे
ऐवाने मुहम्मद हैं।।